 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

माघ-फाल्गुन, संवत नानकशाही ५३९

फरवरी **2008** वर्ष १ अंक ६

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एस. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बीएड.*

चंदा

प्रति कापी	३ रुपये
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६



फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर: वितरण विभाग **303**, संपादकीय विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

विषय सूची

गुरबाणी विचार

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीत हमारा ॥३॥२॥ *(पन्ना ३४५)*

राग गउड़ी गुआरेरी में अंकित इस पावन शब्द के माध्यम से भक्त रविदास जी इसी मातलोक में मनुष्य मात्र के सर्वोच्च आध्यात्मिक विकास की मानसिक-आत्मिक मंजिल की कल्पना करते हुए कथन करते हैं कि हे मेरे भाई! उस शहर का नाम बेगम पुरा (वह स्थान जहां कोई ग़म नहीं है) है, जो मैंने ढूंढ लिया है। उस स्थान पर दुख-तकलीफ है ही नहीं। मैंने वह स्थान पा लिया है जहां माल पर चुंगी-कर लग जाने की कोई आशंका नहीं है। कहने से तात्पर्य, वहां दुनियावी दौलत तथा उसकी सुरक्षा की समस्या नहीं है। एक ऐसा शहर जहां न भूल होती है और न ही उससे उत्पन्न भय का ही सामना करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, अडोल मानसिक-आत्मिक अवस्था में मन पर सांसारिक कार्यों का बोझ नहीं होता और न ही उनके अधूरे रह जाने की आशंका समस्या बनती है। उस अवस्था में कोई दुष्ट-कर्म या पाप-कर्म होने का भय भी नहीं और न ही उससे होने वाली विपदा का ही डर होता है। भक्त जी पूर्ण संतुष्टि की मनोस्थिति में फरमान करते हैं कि मेरा देश बहुत ही अच्छा है जो मैंने दृढ़ता से रहने के लिये पकड़ अथवा चुन लिया है। हे मेरे भाई! वहां सदैव बचाव एवं सुरक्षा है।

भक्त रविदास जी आगे फरमान करते हैं कि अडोल मानसिक-आत्मिक अवस्था सदैव कायम रहने वाली बादशाहत है अर्थात यह सांसारिक बादशाहत की तरह अस्थिर नहीं। इस बादशाहत में रहने वाले लोगों का प्रथम, द्वितीय और तृतीय दर्जा नहीं है बल्कि सभी एक समान निवास करते हैं। सभी के सभी सुख-सुविधायों सहित जीवन बसर करने वाले धनवान और समान रूप में जाने-माने भी हैं। कहने से तात्पर्य मानसिक-आत्मिक अडोल अवस्था में मनुष्य-मात्र पदार्थक वस्तुओं के पीछे अनावश्यक रूप से दौड़-धूप में नहीं उलझता तथा वह प्रभु की ओर से बख़्शी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करते साधन होने पर संतुष्टि महसूस करता है। वह अनचाही भूख और कंगाली की दीन-दशा का शिकार नहीं होता।

भक्त जी फरमान करते हैं कि बेगम पुरा के वासी परमात्मा के महल में विचरण करने के रास्ते में उन्हें किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती भाव प्रभु के नाम में रत्त भक्त को रूहानी आनंद की प्राप्ति होती है। भक्त रविदास जी अपनी तथाकथित चमार जाति का नि:संकोच और आत्म-सम्मान के साथ उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जिसने उपरोक्त मनोस्थिति अथवा मानसिक-आत्मिक अवस्था को प्राप्त किया है वह उनका हम-सहरी अथवा मित्र तथा सतसंगी है, भाव ऐसी मनोस्थिति के धारक सभी सतसंगी होते हैं। ■

संपादकीय

आओ! भक्त रविदास जी का
जात-पात विरोधी सरोकार अपनाकर परस्पर एकता मजबूत करें!

हमारे देश की मूल संस्कृति भले ही प्यार-मोहब्बत के तत्वों से सम्पन्न रही परंतु एक समय था जब इन तत्वों को सर्वथा ही समाप्त कर देने का दुष्कर्म भी यहीं पर हुआ जिससे तथाकथित जातियों के आधार पर इस महान देश के लोग बहुत बुरी तरह विभाजित हो गए। स्थिति यहां तक आ पहुंची कि ब्राह्मण को ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय को भुजाओं से, वैश्य को पेट से और शूद्र को पैरों से निर्मित हुआ कहा, लिखा व प्रचारित किया गया और इसी अवधारणा के अनुसार भारतीय समाज में उनको विभिन्न व्यवसाय अथवा काम मिले और साथ ही उनको विभिन्न मात्रा एवं दर्जे में सम्मान और घृणा प्राप्त हुई। जातियों का विभाजन करने वाला अत्यंत चुस्त, चालाक, धर्म-व्याख्याकार तथा आचार्य बन बैठा हुआ ब्राह्मण स्वयं सर्वोच्च सम्मान का अधिकारी बन बैठा। भारतीय जाति-प्रणाली शेष संसार की जाति-प्रणालियों से अधिक कठोर तथा अमानवीय चरित्र की धारक कही जा सकती है।

सदियों तक भारतीय जाति-प्रणाली में साधारण लोग अत्यंत बुरी तरह पीड़ित होते रहे। उनके दुख, उनकी पीड़ा को मन-अंतर से महसूस करने वाले और उसको बोलकर, गाकर तथा लिखकर प्रकट करने वाले अति संवेदनशील और चेतना वाले प्रभु-प्यारे साहसी-जन भक्त कहलवाये। उनके व्यापक प्रयत्नों द्वारा भारतीय समाज में भक्ति आंदोलन का आगाज़ हुआ। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का प्रारंभ हुआ। मध्य युग में इसका पासार समस्त उत्तरी भारत में हुआ।

भक्ति आंदोलन को शिखर पर ले जाने में कुछ भक्त साहिबान ने विशेष योगदान डाला जिनमें भक्त रविदास जी का नाम बहुत प्यार-सत्कार के साथ लिया जाता है। भक्त जी का जन्म भाई काहन सिंघ नाभा ने १४५६ बिक्रमी का माना है। वे वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में जन्मे। वे एक निर्धन चर्मकार परिवार में जन्म लेकर जहां अपनी जाति के लिए निश्चित व्यवसाय पूर्ण लगन तथा उत्साह से करते हुए अपनी तथा अपने परिवार की उपजीविका चलाते रहे वहां अपनी अर्जित कमाई में से जरूरतमंद लोगों की यथायोग्य सहायता भी करते रहे। ऐसे परोपकारी कार्यों तथा समाज-कल्याण हेतु भक्त जी के लगाव के कारण इनको इनकी इच्छा के विरुद्ध माता-पिता ने घर से अलग कर दिया। भक्त जी ने अपने समय के समाज में न केवल अपने शूद्र कहलवाने वाले भाई-बंधुओं का तिरस्कार होते देखा बल्कि वे स्वयं भी इस तिरस्कार के भुक्त-भोगी थे। भक्त जी ने परमात्मा में अपने दृढ़ विश्वास और उसकी समस्त रचना में उसके निवास की वास्तविकता को गहरे रूप से महसूस करते हुए जाति-अभिमानियों को उनकी भूल को चेताने और सही मार्ग पर लाने को अपने जीवन-ढंग तथा व्यवहार का अभिन्न अंग बना लिया। यह कार्य उस समय के समाज में अनेकों प्रकार की कठिनाइयों तथा चुनौतियों से भरा था लेकिन प्रभु-भक्ति में रत भक्त जी में प्रभु ने ऐसी निर्भीकता तथा ऐसा ऊंचा साहस संचारित किया हुआ

था कि वे इसको कमाल की प्रवीणता एवं कुशलता के साथ निभाने में सक्षम सिद्ध हुए। इसी प्रसंग में हमें भक्त जी के बारे में भाई गुरदास जी की उक्ति *'भगतु भगतु जगि वजिआ चहु चकां दे विचि चमिरेटा'* पढ़ने-सुनने को मिलती है। श्री गुरू अरजन साहिब जी ने भक्त जी के चालीस पावन शब्द श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित किये हैं। श्री गुरू रामदास जी ने फरमान किया है कि भक्त रविदास जी ने हरि की ऐसी कीर्ति गायन की कि उनकी पतित मानी जा रही 'जाति' उत्तम हो गई और चारों ही वर्ण उनके कदमों में आ गए। पंचम पातशाह जी का फरमान है कि कहां तो भक्त रविदास जी मृत पशुओं को ढोने का कार्य करते हैं और जब वे माया के प्रभाव से ऊंचे उठकर साधसंग में प्रकट होते हैं तो हरि के प्रत्यक्ष दर्शन-दीदार करते हैं। भक्त जी स्वयं भी फरमान करते हैं कि उनकी जाति समय के समाज में अत्यंत निचली मानी जाती है। वे तो वाराणसी के आस-पास मृतक पशुओं को ढोने का कार्य करने वाले हैं लेकिन अब वस्तु-स्थिति यह है कि जो समाज में मुखिया पंडित हैं वे स्वयं उनके पास चलकर आते हैं तथा उनको प्रणाम करते हैं। भक्त जी इसका समस्त श्रेय स्वयं पर न लेकर प्रभु-भक्ति को देने से नहीं चूकते। भक्त जी की समस्त पावन बाणी का एक-एक शब्द उनके हृदय एवं मन-अंतर की निर्मल प्रभु-भक्ति-भाव से भरपूर, मानवता की एकता तथा परस्पर प्यार व भाईचारे को मजबूत करने में क्रियाशील और भारतीय जातिगत व्यवस्था को सर्वथा परिवर्तित करके इसकी कायाकल्प करने की असीम क्षमता रखता है। ये चालीस के चालीस शब्द भक्त जी के जीवन-काल में समस्त उत्तरी भारत में व्यापक रूप में गूंजे थे और ये जन-साधारण तथा भक्त जी की प्रतिभा तथा अथाह कमाई को मानने वाले पंडितों अथवा विद्वानों ने भी अवश्य स्मरण किये थे--ऐसा अनुमान वास्तविकता के बिल्कुल करीब है। इस रूप में ऐसा अनुमान भी स्वाभाविक है कि भक्त जी के भरसक प्रयासों के प्रभाव से तत्कालीन भारतीय समाज में जातिगत व्यवस्था को काफी शक्तिशाली धक्का लगा तथा जो लोग तथाकथित नीच जातियों को घृणा की दृष्टि से देखते और छूत-छात के संस्कार से भरे पड़े थे उन्होंने उनके प्रति प्यार तथा सद्‌भावना वाला व्यवहार विकसित कर लिया था।

आज भले ही संविधान में तथाकथित निचली जातियों के लोगों के उत्थान के लिए कुछ व्यवस्थाएं की गई हैं परंतु वे अभी पूर्णतः व्यवहारिक रूप में नहीं आ सकी हैं। देश के कुछ प्रांतों में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी तथाकथित ऊंची जाति वाले लोग तथाकथित निचली जातियों के लोगों के प्रति अमानवीय व्यवहार कर रहे हैं। तथाकथित निचली जातियों के लोग उनकी कई प्रकार से सेवा में लगे हुए भी, अपना बहुप्रकारी शोषण करवाने के लिए विवश हैं। ऐसे तथाकथित ऊंची जातियों के लोगों को भक्त रविदास जी के समय उन पंडितों की उदाहरण को सामने रखना चाहिए जो निज अहंकार का परित्याग करके सही अर्थों में इंसानी जन्म को सफल कर सके। दूसरी ओर तथाकथित नीच जातियों के लोगों को भक्त जी के श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित पावन शब्दों को सुन, पढ़, गायन करके अपने हीनता-दीनता के संस्कार में से बाहर निकलने के लिए भी प्रयासरत होना होगा। ■

जननायक श्री गुरू नानक देव जी एवं उनकी बाणी

*-डॉ. कीर्ति केसर**

श्री गुरू नानक देव जी का जिस युग में पावन प्रकाश हुआ उस समय भारत एक ऐसा भूखंड था जहां कोई भी संगठित केन्द्रीय शक्ति नहीं थी। पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बाद विदेशी लुटेरों के हमले बहुत बढ़ गए थे। भारतीय वीरों की तलवारों को जैसे जंग लग गया था। बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था। अहिंसा के नाम पर कायरता, निकम्मापन, धर्म के नाम पर केवल कर्मकांड और अंधविश्वास ही शेष रह गए थे। जिनके हाथ में तलवार थी वे आपाधापी, आपसी फूट, नस्ल, रंजिशों, भ्रष्टाचार और निजी स्वार्थों में फंसे थे। परस्पर मारकाट और द्वेष तक ही वीरों की वीरता सीमित हो गई थी। राजा और राज-कर्मचारी, व्यभिचारी और विलासी हो गए थे। मत-मतांतरों और विदेशी संस्कृति का हमला भी इस देश की संस्कृति पर हो रहा था। धर्म, समाज, राजनीति किसी में भी कोई केन्द्रीय शक्ति नहीं थी। असुरक्षित जीवन और अकालों के प्रकोप और विदेशी हमलावरों के अत्याचारों के साए में लोग जिंदगी के पल गिन-गिन कर काट रहे थे। सिकंदर लोधी के समय गुरू जी की आयु बीस वर्ष की थी। इब्राहिम लोधी जब गद्दी पर बैठा तब उसकी आयु ४८ वर्ष की थी। इन बादशाहों की धर्मान्धता गुरू जी ने अपनी आंखों से देखी और भारतीय समाज का दुख भी देखा था। श्री गुरू नानक देव जी के हृदय को बहुत दुख हुआ और उन्होंने अपनी बाणी में इस स्थिति का वर्णन इस तरह किया:

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

अर्थात शासक सिंह के समान हिंसक और चौधरी कुत्ते के समान लालची हो गए हैं। वे शांतिप्रिय जनता के सुख-आराम को छीन रहे हैं, उसका मांस खा रहे हैं। राजा के नौकर अपने नाखूनों से प्रजा के शरीर पर घाव करते हैं और कर्मचारी उस खून को कुत्ते की तरह चाटते हैं। इनकी बेईमानी, घूसखोरी, लालच और लूट का वर्णन करते हुए श्री गुरू नानक देव जी फरमान करते हैं:

कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥
कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥
जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ ॥
(पन्ना १२४२-४३)

अर्थात कलियुग के लोग कुत्ते के मुंह वाले हो गए हैं जो मुर्दे का मास भी खाते हैं। वे झूठ बोलकर भौंकते हैं तथा धर्म, ईमान कुछ नहीं रहा। जिन आम लोगों का जीवित रहते हुए कोई सम्मान नहीं बचा, मरने के बाद क्या होना था?

धर्म-कर्म दोनों ही राजा और राज-कर्मचारियों के पतन की स्थिति में पतित हो गए थे। इतिहास में आम आदमी सदा सत्ताधारियों और सत्ता के लालचियों का ग्रास ही बना है।

**१०८६-ई, गोबिंदगढ़, एस. डी. कॉलेज रोड, जालंधर-१४४००१*

इतिहास इन अनाम, अनजान, बेनाम और डरे-सहमे लोगों की कहानी याद नहीं रखता, इनकी कोई बात नहीं करता, इसका हिसाब-किताब तो संतों की बाणी में ही मिलता है। उनका दुख तो श्री गुरू नानक देव जी जैसे संवेदनशील महापुरुषों को ही महसूस होता है, तभी तो जन-जन में विचरण करने और स्थितियों को जनजीवन के अनुकूल बनाने की तड़प भी उनकी भक्ति में शामिल है। वे केवल उपदेशक नहीं सुधारक भी हैं। वे जनसाधारण की मुक्ति के लिए चिंतित भी हैं:

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥
हउ भालि विकुंनी होई ॥
आधेरै राहु न कोई ॥
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ (पन्ना १४५)

अर्थात कलियुग छुरी के समान है, राजे कसाई हैं और धर्म पंख लगाकर उड़ गया है। झूठ अमावस्या की रात बन गया है। इस अंधेरे में सत्य का चन्द्रमा कहीं दिखाई नहीं देता। अंधकार के अहंकार से सृष्टि दुखी है। गुरू जी प्रश्न उठाते हैं कि इस भयानक और दुखद स्थिति से मुक्ति कैसे मिलेगी?

श्री गुरू नानक देव जी ने बाबर का १५२१ ई का हमला भी देखा था वे उसके चश्मदीद गवाह ही नहीं बल्कि स्वयं उसे तन-मन पर सहन करने वाले भी थे। ऐमनाबाद पर हमले में उसने बहुत तबाही मचाई। इतिहासकार मोहम्मद लतीफ के अनुसार इसमें लगभग १६००० आदमी मारे गए, लूट-पाट का तो कोई हिसाब ही नहीं रहा। श्री गुरू नानक देव जी ने आम आदमी के जीवन की दुर्दशा का वर्णन तो किया ही है साथ-साथ उन्होंने परमात्मा को उलाहना भी दिया:

-खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
(पन्ना ३६०)

-जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ . . .
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ (पन्ना ७२२-२३)

बाबा नानक जी की यह भी बहुत बड़ी चिन्ता थी कि अब भारतीय समाज के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। इस हमले में स्त्रियों की जो दुर्दशा हो रही थी गुरू जी ने उसकी पीड़ा भी सही थी; जैसे कि:

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥
(पन्ना ४१७)

इतिहासकार लिखते हैं कि ऐमनाबाद का नाम उस समय सैदपुर था। बाबा नानक जी के साथ भाई मरदाना जी को भी बाबर के सिपाहियों ने बंदी बना लिया था।

इस प्रकार उस समय किसी आक्रमणकारी के सामने निडर होकर खड़े होना और हाकिम जमात की इतने सख्त शब्दों में भर्त्सना करना बहुत बड़ा क्रांतिकारी और साहसी काम था जिसे करना गुरू जी के ही हिस्से आया।

गुरू जी ने समाज-सुधार के लिए एक नये धर्म की स्थापना की जिसमें सभी सृष्टि तथा जीवों का एक परमात्मा में अटूट विश्वास, कर्म करते हुए, सेवा-साधना और गृहस्थ में

रहकर ईश्वर से मेल की बात कही। अंध-विश्वासों को छोड़ने के लिए गुरू जी की कई प्रेरणादायक कथाएं प्रसिद्ध हैं, जैसे काजी को मक्का चारों ओर दिखाना, हरिद्वार में सूर्य को जल चढ़ाने वालों का भ्रम तोड़ना तथा अपनी लम्बी यात्राओं में कई करामाती सिद्धों-योगियों को अपने कल्याणकारी विचारों द्वारा कायल कर लेना आदि। गुरू जी जात-पात के भेदभाव को पूर्णतः मिटा देना चाहते थे। गुरू जी ने फरमान किया:

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

अर्थात नीच जाति में भी जो नीच से नीच है गुरू नानक पातशाह उनके संग-साथ हैं। उनका जाति-अभिमानियों के साथ कोई संबंध नहीं। वे ईश्वर को भी ऐसा मानते हैं जो नीचों को ऊंचा करने वाला है, निर्गुण को गुण देने वाला है और निमानों को मान देने वाला है।

बेबे नानकी के वीर गुरू नानक पातशाह दिव्य पुरुष हैं। उनका प्रकाश कलियुग की आंधी के वेग को रोकने के लिए हुआ। उनका दिव्य दर्शन सर्वप्रथम केवल बेबे नानकी को ही प्राप्त हुआ था।

एक घटना २० अगस्त १५०७ ई को घटी। गुरू नानक देव जी अपनी बहन के घर सुलतानपुर में रहते थे। वेईं नदी पर स्नान करने गए तो तीन दिन तक वापिस नहीं आए। लोगों ने समझा कि शायद वे डूब गये हैं, पर बहन नानकी ने पूर्ण भरोसा रखते हुए कहा कि वह कैसे डूब सकता है जो डूबतों को तारने आया है? तीसरे दिन गुरू नानक देव जी प्रकट हुए तो उनके चेहरे पर ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का अद्‌भुत आलौकिक तेज था। उन्होंने उस समय जो उपदेश दिया वह था-*"ना को हिंदू न मुसलमान ॥"* इसके बाद गुरू जी ने जो भी अपने उपदेश दिए उनमें वैर-विरोध-भाव को दूर करने की ही बात थी। गुरू जी ने सभी के संग प्यार व सांझीवालता की भावना ही सर्वत्र फैलाई। उसके बाद उन्होंने लम्बी-लम्बी प्रचार यात्राएं देश-विदेश में कीं और विभिन्न सम्प्रदायों, विविध मतों-मतान्तरों के लोगों से वार्ताएं कीं और अपने विचारों से लोगों को अपना 'सिख' अर्थात अनुयाई बना लिया।

उनका लोकनायक का रूप आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना गत सदियों में रहा परंतु अफसोस कि अज्ञानता में हम अपने लोकनायकों को इस लोक के जनजीवन से संबंधित करके बहुत कम देखते हैं। इसमें गुरू जी द्वारा उठाये गए प्रश्नों पर समय रहते विचार करने की आवश्यकता है। आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता है कि क्या हमें उनका वारिस कहलाने का अधिकार है? क्या उन्होंने जो हमें सिखाया वह हमने सीखा? यदि नहीं तो क्यों? यदि हां तो कितना? यह आत्म-निरीक्षण करके ही हम गुरू जी द्वारा दिखाये गुरमति मार्ग के पथिक बन सकते हैं। ■

भक्त रविदास जी की बाणी के सामाजिक तथा मानवी सरोकार

*-डॉ. मनजीत कौर**

मध्यकालीन व्यापक भक्ति लहर के महान संतों एवं भक्तों में भक्त रविदास जी का माननीय स्थान है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में कुल ३१ रागों में ३६ महापुरुषों की बाणी संकलित है जिसमें से भक्त रविदास जी के सोलह रागों में चालीस शब्द दर्ज हैं। बहुमत विद्वान खोजी, भक्त रविदास जी का जन्म माघ पूर्णिमा सं. १४३३ को बनारस के निकट हुआ मानते हैं। समकालीन भक्तों की तरह भक्त रविदास जी की बाणी भी समन्वय, विश्वकुटुम्बकम, सदभाव आदि नैतिक मूल्यों की पैरवी करती प्रतीत होती है। तत्कालीन युग में भी आधुनिक युग की तरह कर्मकांड, आडम्बर, जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव दीमक की तरह इस देश की नीवों को खोखला कर रहे थे। इन खोखले आडम्बरों से मुक्ति दिलवाने हेतु जहां आध्यात्मिक रूप से प्रेमा-भक्ति पर वहीं सामाजिक पक्ष से मानवीय समानता पर भी बल दिया गया। ऐसा प्रचार करने वालों में अधिकतर भक्त निम्न जाति से थे तथा समस्त पीड़ाओं एवं ज्यादतियों के भुक्त-भोगी थे। स्थिति इतनी दयनीय हो चुकी थी कि प्रभु-नाम सुनने वाले निम्न जाति के लोगों के कानों में जहां सिक्का ढाल दिया जाता था वहीं भक्त जी अब नाम-सुमिरन एवं भक्ति के प्रचार-प्रसार के कारण पूजनीय हो गए थे।

भक्त रविदास जी तथाकथित चमार जाति से थे। मृत जानवरों को ढोना तथा उनके चर्म से जूते बनाना उनकी उपजीविका थी, लेकिन आत्मिक अवस्था से वे कुलीन थे। उनके सुमिरन एवं सेवा-भाव ने अनेकों को उनका श्रद्धालु बना दिया था। चित्तौड़ की रानी झाला तथा मीरा जी भी उनकी श्रद्धालु बन गई थीं।

भक्त रविदास जी मधुर भाषी तथा सहनशीलता के स्वामी थे। वे लोगों को अपनी जाति के बारे में बताते हैं—"यह सही है कि मैं चमार जाति से हूं जो आपकी दृष्टि में घटिया है परन्तु मेरे मन में 'गोबिंद' का नाम है जिसके कारण मैं अपवित्र नहीं हो सकता। बुरा तो विकारी मनुष्य होता है, चाहे वह किसी भी जाति का हो।" एक उदाहरण देते हुए वे स्पष्ट करते हैं कि शराब बुरी है भले ही वह गंगाजल से बनाई गई हो। इसी प्रकार अहंकार आदि विकार बुरे हैं चाहे वो कोई भी करे। इसके विपरीत अपवित्र शराब तथा अन्य गंदा जल जब गंगा में जाकर मिलता है तो गंगा का ही रूप हो जाता है तथा पवित्र हो जाता है। इसी प्रकार निम्न जाति का मनुष्य भी ऊंचा हो जाता है जब उसका मिलाप प्रभु से हो जाता है।

राग मलार में रचित उनका शब्द उपरोक्त भाव को ही स्पष्ट करता है:

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥
सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे
संत जन करत नही पानं ॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे
सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ (पन्ना १२९३)

वे अपने बारे में पूर्णतया चैतन्य थे, इसलिए कई स्थानों पर अपनी जाति एवं कर्म

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-४**

का हर्ष एवं गौरवपूर्ण बयान करते हैं:

राजा राम की सेव न कीन्ही
कहि रविदास चमारा ॥ (पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी ने दीन-हीन समझे जाने वालों में स्वाभिमान जगाया कि किस प्रकार जो ब्राह्मण-शूद्र की बात नहीं करना चाहते थे वे अब स्वयं यहां आकर झुक रहे हैं। किस तरह समाज में शांति आई तथा घृणा की तपिश कम होने लगी, यह सब ईश्वर-भक्ति का ही प्रभाव था :

आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा ॥ (पन्ना १२९३)

उनके चिंतनानुसार ईश्वर गरीब निवाज है। नीच को ऊंचा करने वाले प्रभु का यशोगान करते हुए भक्त रविदास जी का फरमान है:

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुही ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

अत: भक्त रविदास जी ने मानवीय समानता, आत्म-निरीक्षण, विनम्रता, मधुर भाषण तथा ईश्वर-स्मर्ण आदि गुणों द्वारा परम उच्च अवस्था तक पहुंचने हेतु जिस आदर्श संसार की कल्पना की उसके लिए गहन अर्थों तथा व्यापक भावों वाला एक आकर्षक नाम जुटाया 'बेगम पुरा।' यह वही अनुपम स्थान है जिसे श्री गुरू नानक देव जी ने 'सचखंड' कहा है। यही वह अनुभव नगर है, अबिचल नगर है जहां दैहिक, दैविक तथा भौतिक संतापों से छुटकारा मिल जाता है। विश्व-शान्ति हेतु प्रत्येक इंसान को अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए जैसा कि भक्त रविदास जी की बाणी हमें संदेश देती है:

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥ (पन्ना ३४५)

और ऐसे अबिचल नगर तक पहुंचने हेतु अहंकार को पूर्णतया त्यागना पड़ता है क्योंकि जब तक 'मैं' है तब तक 'तू' प्रकट नहीं होता और हे माधो! जब 'तू' प्रत्यक्ष होता है तब 'मैं' दूर हो जाती है। ठीक वैसे ही जैसे बड़ा तूफान आने पर समुद्री लहरों से नकानक अर्थात्-पूर्णतया भर जाता है, लेकिन वास्तव में लहरें समुद्र के पानी में पानी ही हैं, यह तो मात्र जीव का भ्रम है कि वह उन्हें अलग समझता है, यथा:

जब हम होते तब तू नाही
अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि
जल केवल जल मांही ॥
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥
जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ (पन्ना ६५७)

जब यह भ्रम टूटता है तब सर्वत्र वही ईश्वर समाया प्रतीत होता है। भक्त और भगवान की प्रीति किसी से छिपी नहीं रह जाती, जैसा कि भक्त रविदास जी का फरमान है:

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ (पन्ना ६५८)

अर्थात हे माधो! जैसा प्यार तेरे भक्त तुझ संग करते हैं वह आपसे छिपा नहीं रह सकता और ऐसी प्रीति के होते तू भक्तों को मोह-जाल से अवश्य बचा कर रखता है।

भक्त रविदास जी ईश्वर के अनन्य भक्त हैं। वे इसका प्रमाण देते हुए ईश्वर से अपने विविध सम्बंधों को उजागर करते हुए अपने हृदय के भावों को इस प्रकार व्यक्त करते हैं:

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥रहाउ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥ (पन्ना ६५८)

यही नहीं भक्त जी संसार की नश्वरता को बताते हुए कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हैं कि अभी भी समय है, प्रभु की शरण आ जाओ। क्यों तेरी-मेरी के झगड़ों में फंस कर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा रहे हो! हे जीव! तेरी औकात क्या है? कितने सुंदर शब्दों में उन्होंने इंसान के वजूद की तस्वीर खींची है!

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥रहाउ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२॥
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥ (पन्ना ६५९)

अर्थात जीव रूपी पक्षी बेचारा मानो शरीर में बस रहा है, जिसकी दीवार पानी की है, जिसके पंख हवा (श्वास) हैं, मां के रक्त तथा पिता के वीर्य का जिसे गारा लगा है तथा हाड-मांस नाड़ियों का पिंजर बना है। हे भाई! गहरी नींवें खुदवा कर तू उस पर दीवारें खड़ी कर रहा है, पर तुझे स्वयं के लिए ज्यादा से ज्यादा साढ़े तीन हाथ जगह ही चाहिए। हे भाई! तू जो अपने बाहरी रूप को संवारने के लिए इतना बेताब रहता है, तूने कभी ख्याल भी किया है कि यह शरीर एक दिन राख की ढेरी हो जाएगा? तू ऊंचे महल-माड़ियों का तथा सुंदर स्त्री का अभिमान करता है। ईश्वर का नाम भुला कर मनुष्य-जन्म की बाजी तू हार रहा है। भक्त रविदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! मेरी तो जाति, कुल एवं जन्म सब कुछ निम्न है। यहां तो ऊंची कुल वाले ही डूबते जा रहे हैं, पर मैं तेरी शरण आया हूं।

निष्कर्षत: भक्त रविदास जी की बाणी नम्रता, सहजता, प्रेरणा, प्रेम, भ्रातृ-भावना, मानवता एवं विश्व-शान्ति का संदेश देती है। उनकी बाणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतम मानवी मूल्यों की सृष्टि उनका इष्ट भी है तथा अभिष्ट भी। अत: उनकी दार्शनिक विचारधारा सही अर्थों में सामाजिक कर्म से जुड़ी होने के कारण आज भी प्रासंगिक है।

■

बड़ा घल्लूघारा

-*सुरिंदर सिंघ निमाणा**

सिखों के लिए १८वीं सदी का समय अत्यंत संघर्ष का समय था। बेशक उन्हें प्रारंभ से ही संघर्ष करना पड़ा लेकिन इस सदी में जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके साथी सिंघों को शहीद कर दिया गया तो समय की हकूमत ने सिखों को खत्म करने की मन में धार ली। उन्हें पहाड़ों, रेगिस्तानों एवं जंगलों में रहना पड़ा। छुप कर रहकर भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा और गुरू-भरोसे सिदक, सब्र में दिन काटते हुए अपनी सैनिक तथा जत्थेबंदक शक्ति को कायम रखते एवं बढ़ाते रहे।

फरवरी १७६२ का घल्लूघारा इस सदी की एक बहुत बड़ी घटना थी। वक्त की हकूमत के साथ-साथ सिखों की अहमदशाह अब्दाली के साथ भी ठन गई। अहमदशाह अब्दाली मुगलों के शासन काल के दौरान हिंदोस्तानियों को बुरी तरह लूट रहा था। जब वह लूटमार करके वापस जा रहा होता तो सिंघ अचानक रात-बराते उसकी लूटी हुई सामग्री छीन लेते। जाते। सिंघों ने दो बार उसके द्वारा बंदी बनाई हिंदोस्तानी स्त्रियों को भी छुड़ाकर उनके घरों तक पहुंचाकर गुरू-शिक्षा व गुरू-उपदेश के अनुसार अपना कर्त्तव्य निभाया। लुटेरा तथा अधर्मी अहमदशाह सिखों के इस कार्य से बहुत खफा व गुस्से में था। वह एक विशेष आक्रमण सिखों के खिलाफ करने का इरादा बना चुका था।

जंडियाला का आकल दास सिखों को अत्यंत घृणा करता था। वह सिखों को पकड़वाने-मरवाने के कार्य में बहुत आगे चला गया था। सिखों ने १७६१ की दीवाली को सरबत्त खालसा की एकत्रता की। सरबत्त खालसा नामक इस एकत्रता में सिखों ने आकल दास के विरुद्ध कार्यवाही करने तथा उसे उसके कार्यों के लिए दण्डित करने का निर्णय लिया। अपने ऊपर कष्ट के बादल को भांप कर उसने अहमदशाह अब्दाली को तत्काल ही अपने बचाव के लिए गुहार लगाई। अब्दाली पहले ही सिखों को सबक सिखाने का मन बना चुका था। अपनी संगठित विशाल सेना को लेकर वह तुरंत चल पड़ा।

सिखों को अब्दाली के तीव्र गति से आने का समाचार मिल गया। एक बड़ा सिख समूह, जिसमें कई प्रसिद्ध सिख शूरवीर अगुआ थे, उसमें सिखों के परिवार भी थे, इनमें स्त्रियों, वृद्धों तथा बच्चों की काफी संख्या थी, इकट्ठा हो गया। समय की हकूमत के जुल्मों-जबर से बचाव का प्रयोजन सिखों के समक्ष था।

सिख अब्दाली का टाकरा करना चाहते थे परंतु इस बार उनका प्रमुख उद्देश्य परिवारों की रक्षा-सुरक्षा था। वे परिवारों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना चाहते थे। अब्दाली के आने से पहले यदि वे ऐसा कर पाते हैं तो वे अवश्य अब्दाली को सिख-शक्ति का आभास करा सकते हैं।

अब्दाली के विशेष आदेशों से उसकी आक्रमणकारी सेना ने बहुत तीव्र गति पकड़

सहायक संपादक ।

ली। महीनों में तय हो सकने वाला फासला दिनों में तय कर अब्दाली ३ फरवरी १७६२ को लाहौर आ पहुंचा। फिर यहां से भी तेज गति के साथ वह सिख-समूह की ओर बढ़ने लगा। ५ फरवरी को सिख समूह मलेरकोटला के आस-पास था जब उन पर बहुत ही जोरदार आक्रमण हो गया। सिख सरदारों एवं जरनैलों ने इसका कुशल ढंग के साथ सामना करने की वक्त के अनुसार योजनाबंदी की।

सिंघों ने बच्चों, वृद्धों तथा स्त्रियों को मध्य में रखकर लड़ने वाली सिख सेना को एक रक्षा-कवच के रूप में परिवर्तित कर दिया। वे आक्रमण का सामना करते-करते सुरक्षित स्थान की दिशा में गतिमान भी होते रहे। वे मलेरकोटला से बरनाला की तरफ बढ़ने लगे। अब्दाली की अपने देश से आई सेना में उसके हिंदोस्तान में स्थित समर्थकों, सूबेदारों ने और बढ़ोत्तरी कर दी थी। सरहिंद का नवाब जैन खान और मलेरकोटले के वली खान और भीखन खान भी अब्दाली के साथ थे। सिखों की कमान मुख्य रूप से सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने संभाली हुई थी।

बैरी का आक्रमण बहुत ही व्यापक तथा तीव्र था। इसको जैसे-कैसे सहते हुए सिख-समूह कौमी अस्तित्व को बचाने के लिए कठोर संघर्ष करने लगा। बैरी के मंद इरादों को निष्फल करने के लिए सिख शूरवीर हरेक संभव कोशिश कर रहे थे तथा शहीदी जाम पी रहे थे। बैरी ने एक अन्य आक्रमण, पहले आक्रमण से भी कई गुना जोर के साथ किया जिससे सिंघ शूरवीरों के पांव उखड़ गए। बहुत बड़ी संख्या में न केवल सिंघ शूरवीर ही बल्कि उनके परिवारों के परिवार भी शहीद हो गए। व्यापक जानी नुकसान झेलकर भी सिख अगुआ जरनैलों ने साहस बरकरार रखा और अधिक से अधिक संभव बचाव करने हेतु प्रयत्नशील रहे। सभी सिख मिसलों के जत्थे अपने जत्थेदारों सहित बहुत ही हौंसले के साथ जूझ रहे थे। उन्होंने आक्रमणकारियों को भी कुछ गिनती में खत्म करके अत्यंत कठिन स्थिति में असंभव को संभव बनाया। फिर भी बैरी की जानी क्षति सिखों की इस क्षति के सामने नाम-मात्र रही। हज़ारों की संख्या में सिख युवक, बच्चे, वृद्ध, महिलाएं शहीद हो गईं। यह असह क्षति थी।. यह अब तक की क्षतियों में सबसे बड़ी क्षति थी जिसकी कुछ भरपाई होने के लिए कई सदियों का समय चाहिए था। यह तो सत्य है कि अब्दाली ने अपनी तरफ से जांबाज सिंघों की कमर तोड़ दी थी ताकि वे फिर कभी उसके विरुद्ध उठने का कभी हौंसला न कर सकें, परंतु सिखों ने इसको उस प्रभु का हुक्म मान कर सहन करते हुए सब्र-सिदक कायम रखा। सिख पंथ के इस भाव एवं मनोस्थिति की एक झलक निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है:

इक निहंग बुक तहिं कहयो, ऊचो बचन सुनाइ ॥
तत्त खालसो सो रहयो, गयो सु खोट गवाइ ॥१४६॥
सरदार सबै ज़खमी भए, साबत रहयो न कोइ।
लई शहीदी थी घनन, गिणती सभन न होइ ॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश, कृत भाई रतन सिंघ भंगू, पृष्ठ ४६२)

सिख सैनिकों ने इस घल्लूघारे में अधिक से अधिक संभव रूप में जैसे-कैसे बच्चों, स्त्रियों एवं वृद्धों की जानें बचाने के भरसक प्रयास किये, उसके बारे में लिखा मिलता है:

जिम कर कुकड़ी बचिअन छुपावै। फिलाइ पंख दुइ तरफ़ रखावै।
इम खालसे नै बहीर छपायो । जो बच रहयो, सु आगै लगायो ॥ १२४॥ (वही)

एक सिख शूरवीर के भरपूर जवाबी प्रहार का शब्द-चित्र कवि ने यूं खींचा है:

सो सुन चढ़ सिंघ गुस्सा खाया।
अहिमद शाह वल छोड़ो चलाया।
लभयो न टोलत सो रहयो दूर।
दिसै न दूरों उड रही धूर ॥ ९५॥
फिर सिंघ टोल मुड़ वड़यो बहीर।
तेग मार कढै गिलजे चीर।
मारत तेग गयो हथ थाक।
तौ सिंघ जी लयो नेजो चाक ॥९६॥ (वही)

बड़े घल्लूघारे के वृत्तांत के अध्ययन-विश्लेषण से हमें यह ज्ञात होता है कि कैसे यह घल्लूघारा सिख कौम के समूचे अस्तित्व को खाक में मिलाने के नापाक इरादों से प्रेरित कितना भयंकर आक्रमण था लेकिन सिख पंथ जिसको – *'जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ – सिरु धरि तली गली मेरी आउ इतु मारगि पैरु धरीजै – सिरु दीजै काणि न कीजै'* की प्रारंभिक शिक्षा बचपन में मिली थी और जो साहिबे-कमाल श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के हाथों अमृत-पान करके मृत्यु के भय से सर्वथा ही ऊपर उठ चुका था, का अस्तित्व मिटाना कदापि संभव न था। सिख पंथ को मिटाने के मंद इरादे पालने वालों ने अंत में स्वयं भी मिटना था। बड़े घल्लूघारे को सिख पंथ कदापि भूलेगा नहीं। यह पंथ को व्यापक वंगारों के सामने अड़ने, व्यापक कौमी संकटों से लड़ने और जब्र-जुल्म के विरुद्ध सदैव संघर्षरत रहने की प्रेरणा देता रहा है और भविष्य में देता रहेगा। ■

कविता

प्रणाम कर लीजिए

-डॉ. नागेन्द्र*

मान-स्वाभिमान संग, दिखलायी धर्म-राह,
साहस-प्रवाह अविराम कर लीजिए।
कायर का, क्रूर का न साथ कभी कीजिएगा,
प्रवर प्रलायी से तो दूरी कर लीजिए।
असि को संभालकर वाणी में उमंग संग,
अंतर में सेव्यभाव भूरि भर लीजिए।
श्रद्धा के समेत वीरता के तीर वीर-श्री,
गुरू गोबिंद सिंघ को प्रणाम कर लीजिए।
जिस गुण ग्रामता ने, जीता जन मानस को,
वही गुण गूढ़ता से, जीवन में धार लो।
अंतर में जगत-नियन्ता को संभाल रख,
संकटों से जूझने को , हाथ तलवार लो।
कारण बताये बिना हूलता जो वारण को,
सिंघ बनो, उसे जीतो और ललकार दो।
उर के निकेत वीर वेश के समेत गुरू,
दशमेश प्रिय छवि, आरती उतार लो।
मोह रखे पुत्र, मित्र, साथी-परिवार का न,
एक दिन सबको ही, यहीं रह जाना है।
लोभ-रेख साधो मत अतुल प्रभूत एशि,
जगत सहेजो मत, किसका ठिकाना है!
वही पुरुषार्थ-पुष्प जगत खिलाता किला,
पास जिसके भी भरा शक्ति का खजाना है।
सन्मुख गुरू दशमेश की मिसाल रखो,
वाहिगुरू अंह-संग रखो, शेष आना-जाना है। ■

*प्रभादीप, १२, इन्दिरा कॉलोनी, रामपुर-२४४९०१

साका ननकाणा साहिब

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

फरवरी १९२१ ई की बात है जब भारत पर अंग्रेजी सरकार का राज्य था। अंग्रेजी हकूमत की चालबाजी से पंजाब के सारे गुरुद्वारों पर महंत लोगों का कब्जा था। महंतों ने गुरुद्वारों का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया था। पावन गुरधाम, जहां से धुर की बाणी अथवा अकाल पुरख जी का समूची लोकाई को सर्वसांझा उपदेश देकर, उनका लोक-परलोक संवारना था, वहां पर महंतों द्वारा गैरसामाजिक, गैरधार्मिक काम होने लगे। शराब का वहां पर बेखौफ, बेरोक-टोक प्रयोग होने लगा। श्री गुरू नानक देव जी की जन्म-स्थान वाली भूमि ननकाणा साहिब में वेश्याओं के अड्डे बन गए। गुरधामों की पवित्रता बुरी तरह भंग हो गई थी। महंत लोग किसी की भी नहीं मानते थे। अपनी मनमानी से ही वे सभी काम करते थे। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जहां पर लोग दूर-दूर से आकर सिर झुका कर अपने गुरू का आशीर्वाद प्राप्त करते थे, वहां पर महंत लोगों के बदमाशों, गुंडों द्वारा सभी प्रकार के अनैतिक काम होते थे। गुरुद्वारों में बज्जर कुरहतें होने लगीं। उधर गुरू के सच्चे सिख इन महंतों से गुरुद्वारों को मुक्त करवाने और अंग्रेजों से देश आजाद करवाने का आंदोलन चला रहे थे। अकालियों को अंग्रेज खत्म करना चाहते थे। गुरू के प्यारे सिखों ने महंतों से गुरधाम मुक्त कराने के लिए जत्थे भेजने की तैयारी कर ली।

श्री ननकाणा साहिब पर महंत नारायण दास का कब्जा था। वह लालच करके बेईमान और अपराधी बन चुका था। महंत अंग्रेजों का पिट्ठू था। जो हुक्म अंग्रेजों से उसको होता था, वो वही करता था। २० फरवरी, १९२१ ई को महंत नरायण दास आराम-कुर्सी पर बैठा हुआ था, जब दो आदमियों ने महंत को पूर्व सूचना दी कि कल २१ फरवरी को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में अकाली सिंघों की एकत्रता होने वाली है। वे गुरुद्वारे पर अपना कब्जा कर लेंगे।

महंत नारायण दास अपने साथी गुरदित्त सिंघ को साथ लेकर अंग्रेज अफसर के पास गया। पूरी बात बता दी कि कल को गुरुद्वारा साहिब में सिंघों का जत्था पहुंच रहा है। अंग्रेज की सलाह से महंत नारायण दास भाड़े के बदमाश इकट्ठे करके गुरुद्वारा साहिब के परिसर में चला गया। बंदूकें, बरछे, तलवारें, गंडासे आदि हथियार जमा कर लिये गये। अंग्रेज अफसर ने ५० लीटर मिट्टी का तेल, बहुत से हथियार और सूखी लकड़ी का बड़ा भंडार गुरुद्वारा साहिब में नारायण दास को भेज दिया।

अगले दिन सुबह उठते समय ही नारायण दास के गुंडों ने शराब पीनी शुरू कर दी। हमले का प्रोग्राम बना कर कुछ लोग गुरुद्वारा साहिब के अंदर, कुछ बाहर और कुछ कमरों में बैठ गए। २१ फरवरी १९२१ ई को सुबह छ: बजे के करीब भाई लछमण सिंघ धारोवाली की अगुआई में लगभग दो सौ सिंघों का पैदल जत्था गुरुद्वारा साहिब में दाखिल हुआ। धर्मी सिंघ अपने पैर धोकर इस पवित्र स्थान की धूल माथे पर लगाते हुए गुरू को नमस्कार करके अंदर चले गए और बैठ कर "वाहिगुरू-वाहिगुरू" का

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५१८*

जाप करने लगे। कुछ सिंघ गुरू-दरबार के पास और कुछ बाहर बैठ गए। भाई लछमण सिंघ गुरू महाराज की ताबिया बैठ कर चवर करने लगे। कुछ समय गुरबाणी और कीर्तन करने के बाद भाई लछमण सिंघ ने अरदास उपरांत मुखवाक लिया। जत्थेदार लछमण सिंघ ने सिंघों को संकेत किया कि वे कीर्तन करना शुरू कर दें। गुरू के सिंघ गुरबाणी और गुरू-शब्द में लीन हो गए।

महंत के गुंडों ने निर्धारित बुरी योजना के अनुसार अपनी-अपनी पोजीशनें संभाल लीं। महंत नारायण दास ने संकेत किया। बस, फिर क्या था? गुरू-दरबार में कीर्तन कर रहे और कीर्तन में जुड़े शान्त गुरसिखों पर बंदूकों की गोलियां बरसने लगीं। गुरुद्वारा साहिब के जो बाहर सिंघ थे वे पहले ही आक्रमण में गोलियों से भून दिए गए। गोलियों से छलनी किये गए सिंघ शहीदियां पाने लगे, चारों ओर खून ही खून बहने लगा। कुछ सिंघों के जोरदार आग्रह पर जत्थेदार लछमण सिंघ ने कहा कि "हम लोग ऐसा नहीं करेंगे, हम लोग शान्त रह कर, गुरू-हुक्म में शहीदियां प्राप्त करेंगे। इस महंत के बज्जर पापों को हमारा खून साफ करेगा!" जब बाहर के सारे सिंघ शहीद हो गए तो बदमाश चांदी के गेट में छोटा सा सुराख करके गोलियां चलाने लगे। अंदर वाले सिंघ भी गोलियां लगने से शहीद होने लगे। पूरा गुरू-घर खून से भर गया। महंत के हुक्म से श्री दरबार साहिब के गेट को तोड़ दिया गया। बाकी बचे सिंघ गोलियों से भून दिये गए। एक छोटा बच्चा, जिसका नाम दरबारा सिंघ था, उसको दो बूचड़ घसीट कर महंत के पास ले गए तथा बच्चे के संबंध में उसके हुक्म की प्रतीक्षा करने लगे। महंत ने क्रोध से हुक्म किया, "यह भी अकालियों का समर्थक है, इसको भी खत्म कर दो।" लकड़ियों की तेज जल रही आग में उस बालक को जालिमों ने फेंक दिया। इस प्रकार जीवित ही आग में जलकर भाई दरबारा सिंघ भी शहीदी पा गया।

उधर भाई लछमण सिंघ जो कि गुरू महाराज की ताबिया बैठा हुआ था, को गुंडों ने केसों और लातों से पकड़ कर, घसीट कर, महंत के पास ले जा कर पूछा, "इसका क्या किया जाए?" महंत ने कहा, "इसको गोली से नहीं मारना है। यह जत्थेदार है। इसको जंड के वृक्ष के साथ उल्टा लटका कर नीचे से आग जला कर जीवित ही जला दिया जाए।" भाई लछमण सिंघ के मुंह से "वाहिगुरू-वाहिगुरू" का जाप हो रहा था। महंत के बदमाशों ने जत्थेदार लछमण सिंघ को जंड के वृक्ष के साथ उल्टा लटका कर, नीचे से आग जला कर, जिंदा ही जला दिया। गुरू का सिख शहीदी प्राप्त कर गया।

इस प्रकार यह २०० सिंघों का जत्था गुरू-दरबार को गुंडों-बदमाशों से मुक्त करवाने के लिए पवित्र गुरधाम में अपने खून के साथ महान बलिदान दे गया। इसके बाद *"जदों डुल्लदा खून शहीदां दा, तकदीर बदलदी कौमां दी"* के अनुसार शहीदों की महान शहीदियों का रंग प्रकट हुआ। समय पाकर एक-एक कर सभी गुरुद्वारे महंतों के कब्जे से आजाद हो गए। यह अकाली सिंघों की शहीदियों का रंग ही है कि सभी गुरधामों की पवित्रता कायम रह सकी है, सभी गुरू-घर आजाद हैं। साका ननकाणा साहिब का सिख इतिहास में गौरवमय स्थान है। अगर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का यह दुखदायी शहीदी कांड न होता तो सभी गुरुद्वारों पर महंतों का ही कब्जा होना था। इस जत्थे की महान शहीदियों का रंग अपनी आभा देकर गुरुद्वारों की शोभा और शान बढ़ा रहा है।

■

बेजोड़ सेनानी साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी

*-डॉ. जगजीत कौर**

लाला दौलत राय कट्टर आर्य समाजी दशमेश पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के तेजस्वी व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपनी पुस्तक 'साहिबे-कमाल' में गुरू जी के प्रति अपनी अनन्य श्रद्धा और अति भावपूरित अनुभूतियों को कलमबद्ध करते हुए लिखा है, "... घर-घाट गंवा कर, सारा साजो-सामान लुटाकर और वतन से बिछुड़ कर भी अपने मिशन को अपने सामने रखा और रंचक मात्र भी इधर-उधर नहीं होने दिया। दुखों-मुसबीतों, कठिनाइयों और मायूसियों से गुरू जी का साहस और बढ़ता, स्वभाव में और ही रंग चढ़ता, चेहरे पे लाली आ जाती ... विश्व के इतिहास में उन्होंने एक मिसाल कायम कर दिखाई, सिद्ध कर दिया कि वे कितने बड़े दिलेर और दृढ़ इरादे के मालिक थे। वे ऐसे रणबांकुरे थे कि केवल चालीस सिखों के साथ ही चमकौर की कच्ची गढ़ी में लाखों की गिनती में शाही फौजों के घेरे में होते हुए भी हथियार नहीं डाले और डटे रहे और आखिरी सिख की शहीदी तक मुकाबला किया।" *(पन्ना २१८)*

चमकौर की कच्ची गढ़ी में दिलेरी, अदम्य शौर्य और शूरवीरता की मिसाल पेश करने वाले इसी रणबांकुरे, प्रखर तेजस्वी के प्रखर तेजवान लाडले सपूत बाबा अजीत सिंघ जी भी थे। केवल आठ सिंघ-सूरमों के साथ पूरे दिन लाखों की फौज का मुकाबला करते हुए सूर्यास्त तक, चन्द्रमा के उदित होने तक, रणभूमि में अनेकों को मौत के घाट उतार कर प्राण न्यौछावर कर शहादत पाने वाले महान शूरवीर बाबा अजीत सिंघ जी की रण-कौशलता बेमिसाल है।

महाबली योद्धा बाबा अजीत सिंघ जी दसवें पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबजादों में से सबसे बड़े थे। इनसे छोटे साहिबजादे बाबा जुझार सिंघ जी थे, उनसे छोटे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतह सिंघ जी थे, जो दो नन्हीं जानें सरहिंद की दीवार में चिनकर शहीद कर दी गईं।

बाबा अजीत सिंघ जी का जन्म माता सुंदरी जी की कोख से पाउंटा साहिब में जनवरी सन् १६८७ को हुआ। इनका पालन-पोषण अति प्रेम से किया गया। इतिहासकार बताते हैं कि श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी केवल महान आध्यात्मिक साधक, तपस्वी, प्रभु-चरणों में समर्पित भक्त, महान योद्धा, शूरवीर सेनानी, लेखनी के धनी, उच्च कोटि के भावुक काव्यकार, दीनों के रक्षक, रहम-दिल मसीहा, दलितों और पतितों को कंठ से लगाकर प्यार और स्नेह का साया देने वाले एवं मज़लूमों के रहबर ही नहीं थे बल्कि एक कोमल-हृदय पुत्र, प्रेम करने वाले पति और ममता से भरपूर दिल रखने वाले पिता भी थे। वे अपने माता जी, माता गुजरी जी का अति आदर-सम्मान करते थे, एक आदर्श पति के रूप में प्रत्येक कर्त्तव्य निभाते थे और अपने बच्चों को देखकर खिल उठते थे। अपने चारों बेटों को वे बहुत प्यार करते थे। प्रसिद्ध

**1801-C, Mission Compound, Near-Saint Mary's Academy, Saharanpur-247001 (U.P.)*

इतिहासकार स. सुरजीत सिंघ (गांधी) अपनी पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ सिख गुरूज़' में लिखते हैं "As father and house-holder, he showered filial kindness on his children in torrents. The innocent smiles of his children moved him and he felt thrilled when his children did something which was laudable. He did not miss anything which was essential for the sound growth of them." (Page 610)

इस प्रकार साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए गुरू साहिब ने पूर्ण प्रयास किए। अन्य शिक्षाओं के साथ-साथ वे उन्हें स्वयं अपने हाथों से तलवार के कौतुक, तीरंदाजी, नेजाबाजी और अन्य शस्त्र-संचालन की विद्या सिखाते थे। एक तरह से उनका पालन-पोषण *"धरम चलावन संत उबारन—दुसट सभन को मूल उपारन"* के माहौल की तैयारी के लिए ही हो रहा था। उन्हें फौलाद बनाया गया, दृढ़ इरादा, मजबूत शख्सियत जो हर संकट का सामना कर सके। वे अत्यन्त रूपवान, हठीले नौजवान हो उभरे। ज्ञानी ज्ञान सिंघ उनके भरपूर यौवन, दमकते मुख मंडल के तेज नूर और प्रताप का वर्णन देखिए कैसे करते हैं कि उनके तेज प्रताप, यौवन की गरिमा का ताप सूर्य को भी शर्मसार करता था:

गुर बालक रूप अनूपम अंगन पेख अनंग सुलाजै।
अति छैल छबीले छटे छप छुंगन छोभ छके छत्री छित छाजैं। (प्राचीन पंथ प्रकाश, पन्ना २७८)

बाबा अजीत सिंघ जी की फौलादी शख्सियत को उभारने, निखारने की दिशा में दादी मां माता गुजरी जी का भी भरपूर सहयोग था। वे स्वयं बहुत दिलेर और साहसी थीं। उन्हें वीरतापूर्ण कार्यों में सहयोग देना और उत्साहित करना बहुत अच्छा लगता था। जब उनके विवाह के कुछ ही महीनों बाद करतारपुर की जंग हुई और गुरू-पिता श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी के साथ श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी ने भी तलवार के जौहर दिखाए तो इतिहासकार ज़िक्र करते हैं कि माता गुजरी जी महल की छत पर से पूरे उत्साह में अपनी बांह उठा-उठा कर अपने पति श्री गुरू तेग बहादर जी की हल्लाशेरी करती थीं। इसी बहादुरी का जज्बा उन्होंने अपने चारों पोतों में भी भरा था। वे अक्सर कहा करती थीं कि उनके पोते शेर हैं और शेरों की आयु नहीं देखी जाती। सन् १६९९ की वैशाखी को जब अमृतदाता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे की पाहुल तैयार कर खालसा पंथ की साजना की तो माता गुजरी जी बाबा अजीत सिंघ जी को भी अमृत-पान कराने के लिए पंडाल में ले आईं। माता सुंदरी जी ने जब यह कहते हुए रोकने की चेष्टा की कि अभी बाबा जी छोटे हैं तो माता जी ने यही कहा कि "मेरा अजीत सिंघ शेर की संतान है और शेरों के बच्चे शेर ही होते हैं, उनकी आयु नहीं देखी जाती।" और यह सच्चाई है कि बाबा अजीत सिंघ जी ने बहुत छोटी आयु में ही बहादुरी के कारनामे करने प्रारंभ कर दिए थे। २३ मई सन् १६९९ में ही उन्होंने एक सौ सिंघों के जत्थे की कमान संभाल ली थी और साथ लगते गांव के रंघड़ों को अच्छा सबक सिखाया, जिन्होंने एक बार आनंदपुर साहिब आती हुई पोठोहार की संगत को बीच रास्ते में लूट लिया था। जब गुज्जरों और रंघड़ों ने दड़प की संगत को लूटा तो साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने १५ मार्च सन् १७०० ई को बजरुव गांव पर हमला कर इनको सबक सिखाया। जब सन् १७०० की २३ अगस्त को

पहाड़ी राजाओं ने तारागढ़ पर हमला किया तो बाबा जी आगे होकर अति वीरता से लड़े और कितने ही पहाड़ियों को मौत के घाट उतारा। ७ मार्च सन् १७०३ ई. को साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने सौ सिंघों का जत्था लेकर भाई उदय सिंघ के साथ बासी कलां के नवाब हाकिम को अच्छी तरह सोधा। यह हाकिम, ब्राह्मण द्वारिका दास की पत्नी को उठाकर ले गया था। ब्राह्मण रोता हुआ गुरू-दरबार में पहुंचा। गुरू दशमेश जी ने उसकी आर्त्त पुकार सुनी और बाबा अजीत सिंघ जी को भाई उदय सिंघ और अन्य सौ वीर सिंघों के साथ भेज कर हाकिम को सोधने का आदेश दिया। बाबा अजीत सिंघ जी ने अति वीरता से बासी कलां के हाकिम के पास से ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाया और उसे लाकर ब्राह्मण को सौंपा। इसी तरह एक और ब्राह्मण की नव-विवाहिता को बसी पठाणां का पठान जबरदस्ती उठाकर ले गया। उसने भी गुरू-घर में सहायता के लिए गुहार की तो गुरू जी के आदेश से बाबा अजीत सिंघ जी ने भाई जैता जी, जो खण्डे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर भाई जीवन सिंघ बने थे, इनके साथ जाकर पठान को सोधा और गरीब ब्राह्मण की विवाहिता उसे लाकर सौंपी। इसके बाद भाई जीवन सिंघ और बाबा अजीत सिंघ जी का आपसी प्रेम-प्यार खूब बढ़ गया था। गुरू जी भाई उदय सिंघ, भाई जीवन सिंघ और बाबा अजीत सिंघ को अक्सर ही ऐसे बहादुरी के कार्य सौंपा करते थे। बाबा अजीत सिंघ जी ज्यादातर गुरू जी के निकट ही आनंदपुर साहिब में रहा करते थे। जब आनंदपुर साहिब के घेरे और लड़ाइयां आरंभ हुईं तो बाबा जी इनमें सक्रिय भाग लेते रहे।

३० मार्च, १६९९ खालसा पंथ की साजना के बाद से ही हालात ने करवट ली। अनेकों वीर बहादुर और श्रद्धालु संगतें आनंदपुर साहिब में जुड़ने लगीं। गुरू साहिब के *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* के विचार कट्टर पुरोहितवादी पहाड़ी राजाओं की विचारधारा पर सीधा प्रहार था। वे गुरू साहिब के बढ़ते जाहो-जलाल से चिढ़ने लगे थे। विशेष कर कहलूर का राजा भीमचंद ज्यादा ही ईर्ष्यालु था। संगतें ज्यादा जुड़ने पर साधनों का अभाव भी होने लगा था। गुरू के सिख आस-पास के गांवों से सामान ले आते तथा विवशता में कई बार बलपूर्वक भी लाते। इससे कहलूर का राजा परेशान था। उसने गुरू जी से कहा भी कि वे आनंदपुर साहिब छोड़ कर चले जाएं, पर जैसा कि डॉ. बैनर्जी 'इवोल्यूशन ऑफ खालसा' भाग-२, पन्ना १२७ में लिखते हैं कि गुरू जी ने आनंदपुर साहिब छोड़ने के बजाय और बहादुरों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। इससे सन् १७०० ई. में उन राजाओं की सम्मिलित सेना ने आनंदपुर साहिब को घेर लिया। गुरू जी ने तुरन्त बाबा अजीत सिंघ जी को पहाड़ी सेना पर हमला बोलने को भेजा। कई दिन तक युद्ध चलता रहा, आखिर पहाड़ी राजे थक कर पीछे हट गए। बाबा अजीत सिंघ जी ने अत्यन्त वीरता और कुशलता से युद्ध किया। कुछ दिनों के लिए गुरू जी आनंदपुर साहिब छोड़कर निरमोहगढ़ चले गए। निरमोहगढ़ कीरतपुर से लगभग एक मील की दूरी पर सुरम्य स्थल था। सन् १७०१ और १७०२ तक लगभग शान्ति रही। इसके बाद पुन: पहाड़ी सेना द्वारा छेड़छाड़ शुरू हो गई जिसमें भाई साहिब सिंघ जी शहीद हुए। इस बीच भीमचन्द ने मुगल सरकार से अपील की। मुगल सेना और पहाड़ियों की सम्मिलित सेना ने निरमोहगढ़ को घेर लिया। मुगलों की अच्छी

तैयारी थी। गुरू जी अपने बहादुरों की सुरक्षा के ख़्याल से सतलुज दरिया पार कर बसोली पहुंच गए। बसोली के वीर बहादुर सूरमे थे। सब ने मिलकर दुश्मनों के दांत खट्टे किए। पहाड़िए भाग निकले। गुरू जी ने आनंदपुर साहिब की ओर बढ़ना आरंभ किया। बीच में कलमोट के गुज्जर और रंघड़ों से टक्कर हुई। यहां भी गुरू जी ने बाबा अजीत सिंघ जी को कमान सौंपी। गुज्जरों और रंघड़ों को मुंह की खानी पड़ी। कलमोट का किला भी सिखों के कब्जे में आ गया। बाबा अजीत सिंघ जी के उत्साह से सिखों का उत्साह बढ़ा। गुरू साहिब आनंदपुर साहिब आ गए। बीच में कुरुक्षेत्र गए, जहां से लौटते हुए चमकौर साहिब में फिर मुगलों से मुठभेड़ हुई परन्तु मुगल खुद ही पीछे हट गए। इस घटना का जिक्र 'सूरज प्रकाश' (कवि संतोख सिंघ) में मिलता है।

दो वर्ष कुछ महीने शान्तिपूर्ण व्यतीत हुए और फिर वही छेड़छाड़ शुरू हो गई। वजह वही गुरू जी का बढ़ता तेज प्रताप था। पहाड़ियों ने गुज्जरों और रंघड़ों से मिलकर आनंदपुर साहिब को घेर लिया। यह आनंदपुर साहिब की दूसरी और बड़ी लड़ाई की शुरुआत थी। इस घेरे का सिखों पर कोई असर नहीं हुआ, उल्टा पहाड़ी फौजों का ही नुकसान होता रहा। सिख अपनी पराक्रमता से उन्हें मार कर अन्न-जल, रसद ले आते। अब सरहिंद और लाहौर की मुगल फौजें भी यहां पहुंच गईं और नगर से घेरा उठा कर किले को घेर लिया गया। अन्न-जल की दिक्कत हो गई, रसद समाप्त हो गई।

ऐसे हालात में कुछ सिखों ने गुरू जी से किला छोड़ने की प्रार्थना की। माता गुजरी जी से भी गुरू जी को किला छोड़ने के लिए कहलवाया। गुरू जी समझाते रहे। ४० सिखों ने बेदावा भी लिख दिया। इस बीच पहाड़ियों ने चाल खेली। गाय की कसमें खाकर और औरंगजेब के एक पत्र, जिस पर शाही मोहर थी, द्वारा प्रार्थना की कि गुरू जी किला खाली कर दें, उन्हें शान्ति से जाने दिया जाएगा। गुरू जी को इन कसमों पर विश्वास नहीं था। *गुर बिलास पातशाही १०* के अध्याय १५ के ५४वें छंद में गुरू साहिब के वचनों को कवि कुइर सिंघ लिखते हैं कि गुरू जी ने कहा कि इन पहाड़ियों की जुबान का कोई भरोसा नहीं है—

तुम जानत ना इनके छल को, दगे बाज महां इनसो धर नाही।

परन्तु सिखों के आग्रह पर दिसंबर १७०४ को किला छोड़ दिया गया। गुरू साहिब ने औरंगजेब के पत्र पर विश्वास किया। इस पत्र का ज़िक्र गुरू साहिब ने 'जफरनामे' में भी किया है:

नविशतह रसीदो ब गुफ्तह ज़बां ॥
ब बायद कि कार ईं बाराहत रसां ॥५४॥

"गुरू जी ने भाई उदय सिंघ आदि मुखी सिंघों के साथ विचार करके फैसला किया कि आज रात के समय किला अनंदगढ़ त्याग देना चाहिए।" *(गुरू कीआं साखीआं, सरूप सिंघ)*

"तब साहिब आपणी माता माता गुजरी नूं ऐसा कहिआ। माता जी तुसीं निक्के नींगर नाल लै चाहीए गइआ ॥ वडे दोनों भाई रहिन असाडे नाल ॥ तुसीं पहिलों टुरो पाओ चाल ॥५४१॥"
(बंसावलीनामा)

गुरू जी ने सबको समझा दिया कि सभी एक साथ चलेंगे, रास्ते में कोई कहीं नहीं रुकेगा। हथियारों के अलावा अन्य कोई साजो-सामान नहीं लिया जाएगा। सो रात के समय किला छोड़ दिया गया। अल्ला यार खां योगी बताता है—

तारों की छाओं किलअ से सतगुर रवां हुए।

कस के कमर सवार थे सारे जवां हुए। . . .
चारों पिसर हुज़ूर के हमरह सवार थे।
ज़ोर-आवर और फ़तह, अजीत और जुझार थे।
(बंद नं: १४)

२१ दिसंबर सन् १६०४ ई की बर्फानी रात, रात्रि का गहन अंधकार, शीत लहर चलाती घोर शीत-रात्रि, मूसलाधार वर्षा, ऐसे में लाखों की संख्या में शत्रुओं का दल, लुटेरे फौजियों के समूह के बीच से अपने निर्भय सेनापति गुरदेव जी की कमान में लौह संकल्प, कुर्बान होने की लालसा, अद्वितीय आत्म-विश्वास, मर-मिटने के जज्बे से सराबोर यह काफिला, जिसमें बहादुर सिंघनियां और मासूम बच्चे भी थे, चल पड़े। इतिहासकार प्रो. हरबंस सिंघ के अनुसार उस समय गुरू जी के साथ लगभग ५०० सिख थे। कीरतपुर तक यह काफिला चुपचाप चलता रहा लेकिन जैसे ही कीरतपुर से बिलासपुर का मोड़ लांघ कर सरसा की ओर बढ़ा कि मुगलों और पहाड़ियों की सम्मिलित सेना के आने का समाचार मिला। गुरू साहिब ने अपने जांबाज सिंघों को खास पोजीशनें लेने के आदेश दिए। काफिले को तीन जत्थों में बांट दिया गया। पहले जत्थे की कमान भाई उदय सिंघ को देकर शाही टिब्बी पर मोर्चा लगाने का हुक्म दिया। दूसरे जत्थे की कमान भाई जीवन सिंघ को देकर झखीआं गांव के पास सरसा नदी के किनारे मोर्चा लगाने की हिदायत दी। तीसरे मोर्चे की कमान बाबा अजीत सिंघ जी के पास थी। सरसा के किनारे बाबा अजीत सिंघ जी के साथ शाही फौजों की जबरदस्त टक्कर हुई। बाबा जी ने एक ऊंची टिब्बी पर मोर्चा बांधा था, वहीं से फौजों के अच्छे दांत खट्टे किए। वे वापिस भाग निकले। इधर भाई उदय सिंघ जी के जत्थे के लगभग सभी सिंघ शहीद हो गए। भाई उदय सिंघ जी को गुरू साहिब ने खबर की कि बाबा अजीत सिंघ सरसा पार कर कोटला निहंग खां में निहंग खां के किले पर पहुंचें।

सरसा नदी पार करते-करते शाही फौजों ने जबरदस्त हल्ला बोल दिया। गोलियों की बौछार होने लगी। बहुत से सिंघ वहीं शहीद हो गए, बहुत से नदी के उफनते जल में बह गए। गुरू जी नदी पार कर कोटला निहंग खां पहुंच गए। इस सारे माहौल में गुरू जी का परिवार बिछुड़ गया। माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी, भाई मनी सिंघ जी के साथ थे। छोटे साहिबजादे और माता गुजरी जी को गंगू रसोइया अपने गांव खेड़ी (सहेड़ी) ले गया। उसने इनाम के लालच में छोटे साहिबजादों और माता गुजरी जी को सरहिंद के नवाब को सौंपा और उन्हें बेरहमी से दीवार में चिनकर शहीद किया गया। माता गुजरी जी भी शहीद हो गए।

गुरू जी ने बाबा अजीत सिंघ जी को कोटला निहंग खां से भाई बचित्तर सिंघ जी को लाने को भेजा जो रोपड़ के रास्ते मलकपुर के रंघड़ों और रोपड़ के पठानों से लड़ते हुए बुरी तरह जख्मी हो गए थे। भाई बचित्तर सिंघ जी को वहीं निहंग खां के पास छोड़ कर गुरू जी चमकौर की ओर चल पड़े। पता चला कि फौजें पीछा कर रही हैं। रफ्तार से बढ़ती हुई फौजों ने चमकौर को चारों ओर से घेर लिया। गुरू साहिब बुधी चंद की हवेली में ठहरे। यह कच्ची हवेली थी जिसे चमकौर की गढ़ी कहा गया है। यहां संसार का एक अनोखा युद्ध हुआ जिसकी मिसाल विश्व के इतिहास में कहीं प्राप्त नहीं होती। विश्व-युद्धों के इतिहास में यह स्वर्ण-अक्षरों में लिखा एक गौरवपूर्ण पन्ना है। एक ओर थके-मांदे, भूखे पेट केवल चालीस सिंघ और दूसरी ओर पूरे अस्त्रों-शस्त्रों, गोले-बारूद से लैस दस लाख की फौज—

कहां बीर चाली छुधावंत भारे।
कहां एक नौ लाख आए हकारे।

(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रुत ६)

इन चालीस सिंघों के छोटे-छोटे जत्थे बनाकर गढ़ी के बाहर जंग करने को भेजा जाता। जब काफी सिंघ शहीद हो गए तो गुरू साहिब ने अपने बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ जी को बुलाकर कहा, जिसका अति मर्मस्पर्शी वर्णन कवि कुइर सिंघ 'गुर बिलास पातशाही १०' के अध्याय १६ में करते हैं—

"हे सुत! तुम हम को हो प्यारे। तुरक नास हित तुम तन धारे। जे अपने सिर रन मैं लागे। ता कर नास मलेछ सुभागे। ता ते या सम समा न कोई। तुम दोनहु संगर भल जोई।" अजीत सिंघ तब कर अरदासा। कह्यो देखीऐ आज तमासा ॥२१॥१३४॥

और तब 'देखीऐ आज तमासा' को साकार रूप देते हुए बाबा जी ने केवल आठ सिंघों— भाई मोहकम सिंघ जी (प्यारा), भाई ईशर सिंघ जी, भाई लाल सिंघ जी, भाई नंद सिंघ जी, भाई केसर सिंघ जी, भाई देवा सिंघ जी, भाई कीरत सिंघ जी और भाई मोहर सिंघ जी सहित युद्ध कला के वे कौतुक दिखाए कि दुश्मन दल दांतों तले उंगलियां दबाता रह गया—*"परोपकार के हेत रन माहि धाइ।"* जब बाबा जी ने गढ़ी के बाहर आकर जैकारा छोड़ा तो दुश्मन कांप उठे। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई पिता नहीं देखा-सुना गया जो अपने ही जवान जांशीन को सजा-धजा कर जंग-ए-मैदान में जाने को भेज रहा हो और बेटा भी अद्‌भुत उत्साह से आगे बढ़, लाखों की संख्या के वैरी दल को ललकार रहा हो। बाबा जी ने ललकारा—"आओ मेरे सामने आओ! वही आए जिसमें मरने की जुर्रत है!" कुछ आए भी परन्तु तीरों की बौछार से पछाड़े गए। दुश्मन सेना में नाहर खां आगे बढ़ा। यह मलेरकोटला का एक पठान था जो नुसरत खां और वली मुहम्मद खां का भाई था। रोपड़ में उस समय मलेरकोटियों का थाना था जिससे सरहिंद के नवाब वजीर खां की अधीनगी में यह लड़ाई में शामिल हुआ। इसका जिक्र गुरू साहिब ने 'जफरनामा' में भी किया है। पहले तो इसने बाबा अजीत सिंघ जी को देखकर प्रसन्नचित्त हो कहा, *'तुम आउ जी मिलहु हम सूझते हैं। तु मै रूप पेखे अउरंग साहं, दिहै भारतं खंड की पातिसाही।'* भाव—तुम्हें मारकर मैं औरंगे से भारी इनाम वसूलूंगा परन्तु गुरू साहिब ने इसे देख लिया। एक ही तीर ऐसा चलाया कि अपने अफगान साथियों सहित मैदान छोड़ कर भाग निकला—

चु दीदम कि नाहर बियामद ब जंग ॥
चीशदह यके तीर मन बेदरंग ॥२९॥
हम आखर गुरेजद बजाए मुसाफ ॥ (जफरनामा)

बाबा अजीत सिंघ जी ने तीरों की ऐसी वर्षा की कि—

मचंत घोर संगरं, न अंत मास करदमं।
गिरंत सूरबीरनं लसंत सिंघ जीतमं।
करंत नास बैरनं हसंत देव गैनमं।
करंत पुहप बरखनं, धनंत भाखते नमं ॥१३८॥

(कवि कुइर सिंघ)

आठ सिंघों समेत बाबा जी ने अनगिनत शत्रुओं को मारा—*"दो लख बीर मरे तहि जाई।१४२।" (वही)* लेकिन आखिर तीरों के भत्थे खाली हो गए। तब तलवार निकाली गई। कवच से तन ढके मुगल सरदार के सीने पर बाबा जी ने नेजे का वार किया। नेजा निकालते समय उसकी नोक मुड़ गई और नेजा निकला नहीं। तब तलवार लेकर बाबा जी घोड़े पर सवार होकर शत्रु दल के अंदर प्रवेश कर

गए और अनगिनत सिर झटक दिए। तभी उच्च के पीर जलालुद्दीन के पोते का बाबा जी को खंडे का मारू प्रहार लगा। गहरा घाव लगने से रक्त की नदी बह चली परन्तु गिरते-गिरते भी उन्होंने कस कर खंडा फेंका और एक का शरीर दो-फाड़ कर दिया-

एक के सीस धरि दुइ टुकरे करे।
दुइ के सीस धरि करत चारे।
भांत इह पूर परवार दीने कई रकत दरीआउ
मै परे सारे ॥४१॥५१०॥ (अध्याय १२)

बाबा अजीत सिंघ जी ने शहादत प्राप्त की। छोटे भाई बाबा जुझार सिंघ जी इस दृश्य को देखकर कहने लगे, धन्य हो भाई, तुम्हारा खंडा तब तक तुम्हारे हाथ से नहीं गिरा जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण थे-

धंन धंन तुमरे असि ताई।
धंन धंन कर मुखो अलाई।
मै तुम भ्रात सदा संग जाना।
मो पाछै तज करा पियाना ॥१४५॥ (अध्याय १६)

"मुझे पीछे क्यों छोड़ गए हो? रुको! मैं भी आ रहा हूं। मुझे अकेले छोड़ कर क्यों जा रहे हो? मुझे भी शहीद होना है।" गुरू जी ने उन्हें पूरी तैयारी से भेजा और वे भी जौहर दिखाते हुए शहीद हो गए। शहादत के समय बाबा अजीत सिंघ जी की आयु १७ वर्ष, ११ महीने और १९ दिन की थी। संसार के इतिहास में इतनी छोटी आयु का अणखीला सिपाही अनगिनत शत्रुओं को मार कर शहादत पाने वाला बेमिसाल है। पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी भी बेमिसाल पिता हैं जो बेटे के युद्ध-भूमि में शहीद होकर गिरने पर कह रहे हैं-

पीयो पियाला प्रेम का, भयो सुमन अवतार।
आज खास भयो खालसा, सतिगुर कै दरबार
॥२५॥१४०॥ (गुरबिलास पा: १०, कृत कुइर सिंघ)

आज खालसा साजने का उद्देश्य संसार के सामने स्पष्ट हो गया है; पिता, पुत्र की शहादत पर अकाल पुरख वाहिगुरू जी का धन्यवाद कर रहा है कि पुत्र ने अमृत-पान कर खास विशिष्ट प्राणी की मिसाल पेश की है। आइए! 'श्री गुर सोभा' के कवि सेनापति के शब्दों में गुरू-पुत्र को नमन करें—

धंनि धंनि गुरदेव सुत तन को लोभ न कीन।
धरम राख कल मो गए दादे सो जस लीन ॥
(अध्याय १२)

■

कविता

आज दीप जलाओ

दीप जलाओ आज दीप जलाओ!
बंदीछोड़ गुरदेव को सर झुकाओ!
किला ग्वालियर से अमृतसर आये,
जालिम मुगल जिन्हें रोक न पाये,
खुशी मनाओ आज खुशी मनाओ!
अदलो-इंसाफ की जोत जलाई,
तख्त अकाल साजा, सत्य नींव रखाई,
उन्हें अराधो उन्हें धिआयो!
जुल्मी राज ने उन्हें बंदी बनाया,
पर वो बंदी रख न पाया,
उनकी शोभा-शब्द अलायो!
संगत का रोष ग्वालियर था पहुंचा,
सत्य नाम जैकारा गूंजा,
कराओ गुरदेव के दरस कराओ!
न को बैरी नही बेगाना,
गरीब-गुरबे का दर्द पहचाना,
गुरू-कीर्ति की महक महकाओ!

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तन वाली सड़क, शाला पुराना, ज़िला गुरदासपुर।

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह

*-स. गुरदीप सिंघ**

खुशी जीवन की प्रेरणा होती है। दुख जीवन की गति को रोकता है। जिंदगी इतनी मुश्किल है कि खुश रहना जरूरी है। खुशी न हो तो जिंदगी अर्थहीन लगेगी। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य सारे काम खुशी हासिल करने के लिए करता है। मनुष्य के हर कर्म, हर प्रयास के पीछे एक ही भावना होती है कि उसको सुख मिले, जिंदगी में उसका सम्मान हो, हर तरफ उसको शोहरत मिले पर जहां हर काम मनुष्य सुख या अमन-चैन की प्राप्ति के लिए करता है वहीं उसको डर भी रहता है कि जो कुछ उसके पास है वह कोई छीन न ले। इस प्रकार मनुष्य की सारी जिंदगी की दौड़ सुख की प्राप्ति और दुखों से मुक्ति पाने में ही लगी रहती है। इंसान का मन हर समय खुशी पाने के यत्न में ही लगा रहता है। सब अपनी ही तरह से सुख प्राप्ति करना चाहते हैं। खुश रहना, मौज-मस्ती में रहना, आनंद की प्राप्ति हो, यही जीवन का मनोरथ मानते हैं।

इच्छानुसार किसी वस्तु की उपलब्धि सुख का स्वरूप है। खुश रहना आत्मा का जन्म-जात स्वभाव है। इंसान की आत्मा अपने असली रूप में प्रसन्न, शीतल और खुश है, पर चिन्ता, डर, गुस्सा आदि इसको परेशान कर देते हैं। स्थाई सुख के लिए जरूरी है—अच्छी सेहत, रोगों से आजादी, बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के साधन, परिवार में प्यार, मेल-मिलाप, आज्ञाकारी संतान, रचनात्मक कार्य, जीवन में आशावादी होना आदि।

हर मनुष्य चाहता है कि वह हमेशा सुखी रहे, उसे किसी प्रकार का कोई दुख न हो। किसी अनजाने भय से मनुष्य जादू-टोने, ग्रह-चाल, नक्षत्र, तावीज, करामात, चमत्कार, जन्म-पत्री, हाथ की रेखाओं, ज्योतिषफल, तान्त्रिक आदि के भ्रम-जाल में फंस जाता है। लोग खुशी लेने के लिए ज्योतिषियों, साधू-संतों, फकीरों आदि के पास जाते हैं पर सभी से ठगे जाते हैं और अपना सब कुछ गंवा बैठते हैं। लोगों को दुखों से दूर करने और मौत के भय से बचाने का दावा करने वाले स्वयं मौत से डरते हैं, वे स्वयं अपना दुख दूर नहीं कर सकते।

असीमित इच्छाएं : एक आदमी की टांगें नहीं हैं। वह व्हील-चेयर पर जाता है। उससे यदि पूछा जाए कि उसे सुख के लिए क्या चाहिए तो वह कहेगा कि उसकी टांगें हों। जिसकी टांगें हैं, चल सकता है, उसे साइकिल की इच्छा है। साइकिल वाला जब स्कूटर या मोटरसाइकिल देखता है तो उसकी भी वही चाहत होती है कि उसके पास भी स्कूटर हो और स्कूटर वाला कार चाहता है। कार वाला और बड़ी कार या फिर हैलीकाप्टर की इच्छा रखता है। इस प्रकार इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है।

आज का मानव सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील है। वह सोचता है कि मानसिक खुशी तभी मिल सकती है जब शरीर को सुखी रखा जा सके। मनुष्य यह सोचता है कि सुख के साधन तभी हासिल हो सकते हैं जब उसके पास बहुत सारा धन हो, पर मूल जरूरतों को पूरा

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना। मो: ९८८८१-२६६९०*

करने से अधिक धन सुख का कारण नहीं बनता। जरूरत से अधिक धन से ही मनुष्य बिगड़ जाता है, आलसी तथा कामचोर हो जाता है, नशे करता है, बुरी संगत में फंस जाता है, जिसकी वजह से वह हेराफेरी करता है, किसी की बात नहीं सुनता। जायदाद और धन-दौलत के स्वामी बनने तथा व्यापार में दौलत का झगड़ा आदि से मनुष्य एक-दूसरे के खून के प्यासे बन जाते हैं। सुख-सुविधाएं, आराम, धन, उन्नति आदि में अमेरिका बहुत आगे है पर वहां के लोग आत्म-हत्या बाकी देशों के मुकाबले ज्यादा करते हैं। धन की बहुतायत और सुख के साधन बढ़ जाने से मनुष्य सुखी नहीं है। किसी अप्रत्याशित घटना के घटने से, व्यापार में घाटा हो जाने से वह बेचैन हो उठता है, खुश होने की जगह वह रोने लगता है, उसे चिन्ता-रोग लग जाता है, उसका तन और मन दोनों रोगी हो जाते हैं। मनुष्य जो भी कार्य करता है उसका फल मिलता है और फल दो तरह का होता है। तन से संबंधित और मन से संबंधित। जो शरीर से बाहर का काम करता है उसका फल जल्दी मिल जाता है पर जो मन के अनुसार करता है उसके फल को समय लगता है, जैसे कोई मनुष्य पाप करता है उसको बाद में जब दुख होता है तब कहता है कि न जाने कौन से पापों की सजा मुझे मिल रही है! चोर, डाकू, ठग और बुरे काम करने वाले जो भी काम करते हैं वे भी अपने सुख की प्राप्ति के लिए करते हैं।

जिस सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिए मनुष्य बाहर की ओर दौड़ता है उसका मूल सोमा तो उसके अंदर ही है। मनुष्य सुख की खातिर धन, बल और समय लगाता है पर पदार्थवाद से कभी असली तृप्ति नहीं हो सकती। पैसों से अस्थायी आराम तो खरीदा जा सकता है पर सच्ची शान्ति नहीं। जैसे-जैसे ज्यादा सुख-आराम खोजते हैं, वृत्ति तृष्णालु होती है और भूख भी बढ़ती है, जैसे यदि जलती आग में लकड़ी डाल दी जाए तो आग और अधिक भड़कती है। धन, ऐश्वर्य, मान-बढ़ाई सच्ची शान्ति नहीं दे सकते।

दुख चार तरह के होते हैं :

१. *बिछोड़े का दुख :* आध्यात्मिक तौर पर आत्मा का परमात्मा से विछोह।
२. *पेट की भूख का दुख :* अत्याधिक गरीबी।
३. *बुरे कर्मों के फल का दुख :* मृत्यु का भय।
४. *तन और मन का दुख :* तन को रोग होता है, मन को शोक होता है।

दुख किसी भी रूप में अच्छा नहीं लगता। शरीर का दुख हमें पीड़ा देता है। समाज में किए गए बुरे कामों से प्राप्त दुख हमें बदनामी, परेशानी और अपमान दिलाता है। बुरे कामों का दुख मन में अशान्ति पैदा करता है। मानसिक तौर से असंतुष्ट रहने का दुख हमें जिंदगी के अच्छे गुणों से हटाकर प्रभु-मिलाप से दूर करता है।

दुख का सामना और सुख की प्राप्ति के लिए कुछ उसूल :

१. सबसे जरूरी है शरीर का निरोग होना, स्वस्थ रहना और पेट का साफ रहना।
२. खुश रहने के लिए जरूरी है संतोषी होना। असंतोष हमारी निराशा का सबसे बड़ा कारण है।
३. दूसरों की सफलता की तुलना अपनी सफलता से न करो, बल्कि उनकी सफलता को अपना आदर्श बनाओ।
४. आलस्य, चोरी, पर-निंदा से बच कर रहो।
५. अपनी सोच को सकारात्मक बनाओ, चेहरे पर मुस्कराहट रखो, चढ़दी कला में रहो। हृदय-विशेषज्ञों के अनुसार द्वेषात्मक वृत्ति से दिल के दौरे का ज्यादा खतरा रहता है।

६. खुश रहने के लिए कोई अच्छी आदत अपनाएं। जरूरी नहीं कि वह आदत महंगी और थकान वाली हो।

७. नियमित रूप से सैर और कसरत करें। व्यायाम से न केवल तंदरुस्ती बढ़ती है बल्कि यह हल्की बेचैनी दूर करने का बढ़िया साधन भी है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

८. लम्बे-गहरे सांस लें। सुबह के समय कुछ गहरा सांस लेना अपने आप में एक कसरत है। दुख के समय जब हम सांस छोड़ते हैं (आह भरना) तो राहत महसूस होती है।

९. जरूरत से अधिक खाने-पीने का परहेज करें।

१०. कुछ लोग नींद की कमी से पीड़ित होते हैं। शरीर में थकान, आलस्य और बेचैनी होती है, अत: सही नींद लेनी चाहिए। सुबह जल्दी उठने के लिए रात को ज्यादा देर तक मत जागो।

११. मुसीबत के समय किसी दोस्त, संबंधी या हमदर्द से मशविरा लो। दिल की बात सांझी करने से मन का बोझ हल्का हो जाता है।

१२. जिंदगी में आए दुख-मुसीबत से घबरा कर किसी भ्रम-जाल में पड़ने की बजाए उसका सही हल खोजने का प्रयास करना चाहिए।

१३. अपनी इच्छाओं को सीमित रखें। अपनी चादर के अनुसार ही पांव फैलाएं और कर्ज से बचने का प्रयास करें।

१४. जीवन में छोटी-छोटी बातों को लेकर उनसे परेशान होने की बजाए खुशी खोजने का प्रयास करें। आशावादी बनें। समय के साथ जख्म भर जाते हैं, समय एक सा नहीं रहता।

१५. जुआ, सट्टा, नशे आदि बुरी आदतों से बचाव करें।

१६. सेवा करें, अपने से आगे तक सोचें, जरूरतमंदों तक पहुंचें। खुश रहने के लिए समाज में अपनी उपयोगिता बढ़ाएं। यह दुनिया दुखों और संघर्षों से भरी पड़ी है। जब कोई मनुष्य निजी स्वार्थ को पूरा करने की जगह दूसरों के दुख दूर करने और उन्हें सुख देने के लिए कोई काम करता है, यही सेवा है। सेवा वह हर काम है जिससे लोगों को सुख, राहत, आराम, संतुष्टि और शान्ति मिले।

१७. सहज भाव से रहें। सहज अवस्था में रहने से हम खुश रहते हैं। खुश रहने वाले ही दूसरों को खुशी बांट सकते हैं।

१८. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विचार-क्रिया एक कुदरती प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। नींद के समय भी हमारे दिमाग में विचार-प्रक्रिया लगातार चलती है। यह धारणा गलत है कि हमारा विचारों पर नियंत्रण है और हम सोचना बंद कर सकते हैं। अधिकतर विचार हमारे काबू में नहीं हैं। विचार ही हमारे दुखों-क्लेशों के लिए जिम्मेवार हैं। विचारों पर काबू पाने की कोशिश हमें बेचैन करती है। जब हम परमात्मा के नाम का जाप करते हैं तो बाकी विचार पीछे हट जाते हैं। जब विचारों में परमात्मा का नाम शामिल हो जाता है तो हमें हर प्रकार के तनाव से मुक्ति मिल जाती है।

श्री गुरू नानक देव जी फरमाते हैं कि जिस शरीर में परमात्मा का नाम बसता है वह शरीर सोने की भांति शुद्ध रहता है। सदा थिर रहने वाले परमात्मा के नाम में ही लिप्त रहने से जीव को तृष्णा आदि रोगों से मुक्ति मिल सकती है :

दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥
नानक छूटसि साचै नाइ ॥ (पन्ना १२५६)

दुनिया में सुख के समय अनेक साथी बन जाते हैं पर दुख में कोई भी साथ नहीं होता। श्री गुरू तेग बहादर साहिब फरमाते हैं कि प्रभु का भजन करना चाहिए, अंत समय में परमात्मा

ही मददगार बनता है:

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥
(पन्ना १४२८)

दुख आ जाए तो हम परमात्मा को कहते हैं, "हे परमात्मा! यह आपने मेरे साथ क्या कर दिया?"

दुख में भी परोक्ष रूप में हमारा अपना भला हो सकता है। मनुष्य दुख की चोट के बिना संभल नहीं पाता। दुख आने पर जाग जाता है, सुचेत हो जाता है। दुख की चोट प्रकृति के नियम के उलट जाने का एक अलार्म है। यह गलत आहार, गलत चाल-चलन, गलत कर्म, बुरे कामों का नतीजा है। गुरू नानक साहिब का फरमान है कि संखिया एक जहर है पर कई किस्म की जड़ी-बूटियां मिला कर आग में इसको तपाया जाता है, इसका 'कुस्ता' तैयार किया जाता है। वह कुस्ता, वह तपाया हुआ संखिया एक बढ़िया दवाई बन जाता है जो कई प्रकार के रोगों को दूर करता है। दुनिया के दुख-क्लेश मनुष्य पर दबाव डालकर उसका आत्मिक जीवन खत्म कर देते हैं। यही दुख दवाई भी बन जाता है। दुनिया के दुख-क्लेश इंसान के लिए जहर हैं, पर इस जहर का कुस्ता तैयार करने के लिए परमात्मा के नाम का जाप किया जाए तो बुरे कर्मों का नाश हो जाता है:

दुख महुरा मारण हरि नामु ॥
सिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ (पन्ना १२५६)

श्री गुरू तेग बहादर साहिब जी फरमाते हैं कि यह मानव शरीर बड़ी मुश्किल से मिलता है, इसको धन-दौलत की खातिर भटकना में ही नहीं गंवा देना चाहिए। यदि मनुष्य सुख हासिल करना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह परमात्मा की शरण में आए :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

■

कविता

अनमोल मोती

*-कवीशर स्वर्ण सिंघ भौर**

घर में सतर चाहिए, पुत्र चतुर चाहिए, मुख से अतर चाहिए, आये दुर्गंध न।
नैनों में शर्म चाहिए, दिल में धर्म चाहिए, मन में न भ्रम चाहिए, इससे बड़ा आनंद न।
घर में नेक नारी हो, नाम से श्रृंगारी हो, पति को प्यारी हो, बिखरते तंद न।
जमाई-भाई नेक हो, पुत्र चाहे एक हो, सरवन सा नेक हो, पड़ते बंध न।
नाम की रंगत हो, साध की संगत हो, गुरू की पंगत हो, छोड़े अकलमंद न।
धर्म की कमाई हो, दया दिल में आई हो, संत व सिपाही हो, पैदा हो द्वंद न।
सबके सुख की आस हो, दिल न उदास हो, जुबां पे मिठास हो, चाहिए गुलकंद न।
बसंत की बहार हो, खिली गुलजार हो, 'भौर' नाम का आधार हो, चाहिए और गंध न।

■

**गांव-डाक: सरली कलां, तह: खडूर साहिब, जिला : तरनतारन (पंजाब)*

सिख शहादतों का मूल आधार : सिख धर्म का सत्यवादी सिद्धांत

*-भाई जैदीप सिंघ**

संसार के इतिहास में सिख धर्म की आयु लंबी नहीं है लेकिन अगर हम इसके पैरोकारों की शहादतों की बात करें तो कोई भी धर्म इसकी बराबरी करने से कोसों दूर है।

कहा जाता है कि संसार में बहुत सारे डर व लालच हैं। किसी को भी अपनी बात मनवाने के लिए पहले लालच दिए जाते हैं। यदि वह लालचों से नहीं मानता तो उसे मौत का डर दिया जाता है। सबसे बड़ा लालच जीवन का है और सबसे बड़ा डर मृत्यु का। इसके आगे सभी डर व लालच छोटे पड़ जाते हैं।

सिख धर्म एक सामाजिक धर्म है जो प्रभु-भक्ति हेतु संसार समाज को छोड़कर जंगलों, गुफाओं आदि में जाने को तरजीह नहीं देता बल्कि समाज में रह कर ही प्रभु-भक्ति करने को कहता है। इसके साथ ही गुरू साहिबान ने एक और उपदेश अपने पैरोकारों को दिया है। वह है आदर्श समाज का। सिख ने इस निशाने को भी अपने जीवन का एक अंग बनाए रखना है और जो भी इस निशाने की पूर्ति करने में रुकावटें खड़ी करता है उसके साथ संघर्ष करना है।

संसार में बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं जो अपने हितों को ही लेकर चलते हैं, उन्हें जनसाधारण की कोई परवाह नहीं होती। ऐसे मीर (हाकिम) अपने शासन काल में लोग-हितों को छोड़ देते हैं, जिससे समाज का कितना ही नुकसान हो जाता है। आम तौर पर लोग हकिमों द्वारा किए गए जुल्मों को सहते रहते हैं कि अगर हम कुछ बोले तो हमें और ज्यादा मार पड़ेगी, हम पर और ज्यादा जुल्म किए जाएंगे। लेकिन सिख धर्म के पैरोकार जिनके भीतर गुरबाणी ने शक्ति भरी है, वे ऐसे हाकिमों के प्रति चुप धारण नहीं किए रखते बल्कि उनके विरोध में आवाज बुलंद करते हैं। श्री गुरू नानक देव जी ने यह आवाज बुलंद की थी। जब बाबर ने ऐमनाबाद में भयानक नरसंहार किया था तब श्री गुरू नानक देव जी ने उसको जाबर कह कर विरोध प्रकट किया था और आने वाले समय में वे अपने सिखों को भी उपदेश दे गए कि सच्चाई की आवाज को प्रकट करना है इसके लिए चाहे कितनी भी कुर्बानियां करनी पड़ जाएं पीछे नहीं हटना। इसलिए हम जब सिख इतिहास को पढ़ते हैं तो हमें इसका एक-एक ऐतिहासिक पन्ना शहादतों से भरा दिखाई देता है।

अगर हम थोड़ा सा खोज-मार्ग पर चलें कि इन शहादतों के पीछे कौन सी शक्ति काम कर रही थी तो हमें मालूम पड़ेगा कि जो सिद्धांत व उपदेश गुरू जी ने दिए हैं वही शक्ति रूप से काम कर रहे हैं।

हम देखते हैं कि एक आम मनुष्य संसार के लोभ-लालच व पदार्थों के पीछे ही लगा रहता है और इसके लिए सभी अच्छे-बुरे काम कर लेता है, दुनिया की खातिर दीन (धर्म) को छोड़ देता है। गुरबाणी ने उसको शिक्षा दी है कि इन

**भाई कन्हैया जी सेवा सिमरन केंद्र, फगवाड़ा (पंजाब), मो: ९८८८३-८६२३३*

पदार्थों में तो कुछ भी तेरे साथ नहीं जाएगा। भक्त फरीद जी कहते हैं:

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥

(पन्ना १३८०)

श्री गुरू तेग बहादर जी तो कहते हैं कि जो शरीर है वह भी साथ नहीं जाएगा:

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ *(पन्ना ७२६)*

ऐसे बहुत से उपदेश मनुष्य को संसार की सच्चाई बताते हैं। ऐसे वचन मनुष्य के अंतर-मन को समाज के लिए कुछ अच्छा करने को कहते हैं। फिर उसे जीवन-मृत्यु की समझ भी आ जाती है कि संसार से तो एक दिन जाना ही है तो फिर क्यों न समाज के प्रति कुछ अच्छे कार्य किए जाएं? धर्म को अपने जीवन का अटूट अंग बनाकर ही क्यों न रखा जाए! गरीब मज़लूमों पर हो रहे अत्याचारों से उनकी रक्षा की जाए! एकता, समाजिक बराबरता के लिए यत्न किए जाएं! जो लोग अपनी हकूमत, पदवी बचाने व उसे बरकरार रखने के लिए मजहब के नाम पर दंगे-फसाद करा देते हैं उनके विरोध में जंग लड़ी जाए, ताकि समाज में शांति बनी रह सके और यह सब करने के लिए हमें गुरबाणी व सिख इतिहास से उचित दिशा मिलती है।

इसलिए हम देखते हैं सिख कुर्बानी करने में पीछे नहीं हटते हैं लेकिन दुख होता है इस बात पर जब कुछ लोग समझ कर या नासमझी में सिखों को ही दंगाकारी, जराइम-पेशा, पता नहीं क्या-क्या कहते रहते हैं, उन लोगों से मैं अनुरोध करूंगा कि वे सिख-इतिहास को अवश्य पढ़ें। सिख गुरू साहिबान और सिखों ने जो युद्ध किए हैं, कुर्बानियां दी हैं, वे जर, जोरू और जमीन के लिए नहीं, जैसे कि संसार में और युद्ध हुए हैं। गुरू जी और उनके सिखों का लक्ष्य तो केवल आदर्श समाज है, न्याय, बराबरता, अमन-शांति है। इसके लिए गुरू जी पीछे नहीं हटे चाहे उनको अपना पूरा परिवार बलिदान करना पड़ा और उनके सिख भी पीछे नहीं हटते हैं चाहे उनको कितनी भी बड़ी कीमत चुकानी पड़े। वे अपने निशाने के लिए यत्नशील हैं और रहेंगे। यही है सिख धर्म में शहादतों का मुख्य कारण, जो पहले से चलता आया है, चल रहा है और जुल्म के विरोध में चलता रहेगा। ■

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कैसे अस्तित्व में आई?

*-स. जसपाल सिंघ**

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के आदर्श प्रबंध तथा सिख पंथ के हितों की पहरेदार एक चुनी हुई प्रतिनिधि सिख संस्था है। इस बात पर हर सिख गर्व महसूस करता है। इस बारे में प्रत्येक सिख को भी जानकारी होनी आवश्यक है कि यह कमेटी कैसे अस्तित्व में आई? इस आलेख द्वारा संक्षिप्त शब्दों में इसकी स्थापना का इतिहास वर्णन करने का यत्न किया गया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के निर्माण का इतिहास बहुत ही कुर्बानियों भरा है। इस कमेटी को स्थापित करने के लिए सैंकड़ों सिखों को शहीदियां देनी पड़ीं, हजारों की संख्या में सिखों को जेलों की काल-कोठरियों में कई-कई वर्ष गुजारने पड़े। अनगिनत सिखों ने बेअंत यातनाएं, कष्ट अपने तन पर सहे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि महाराजा रणजीत सिंघ के पश्चात पूरे पंजाब पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। अंग्रेज भारत पर कब्जा करने के पश्चात अपने ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे तथा गुरुद्वारों का प्रबंध अपने अधीन रखना चाहते थे। अंग्रेजों के इन मनसूबों के पूर्ण होने में सिख सबसे बड़ी रुकावट थे। वे नहीं चाहते थे कि सिखों की अपनी अलग गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हो तथा वे इच्छानुसार अपने फैसले ले सकें। अंग्रेजों ने सर्वप्रथम १८४९ ई. में श्री अकाल तख्त साहिब तथा श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंध के लिए नौ सदस्यीय कमेटी बनाई, जो जिलाधिकारी द्वारा नियुक्त सरबराह के अधीन थी। सरबराह सीधे तौर पर जिलाधिकारी को उत्तरदायी था। उस समय महंतों का गुरुद्वारों पर कब्जा था। वे गुरू-घर के धन का बहुत दुरुप्रयोग करते थे। यहां तक कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब के रुमाले श्री हरिमंदर साहिब के अंदर से शरेआम बेचे जाते या पुजारियों की औरतें लहंगे बनाकर पहनतीं। अन्य गुरुद्वारों से भी कई प्रकार की शिकायतें आ रही थीं कि महंत बहुत ही बिगड़ चुके हैं। गुरुद्वारे में बहनों-माताओं-बच्चियों की इज्जत महफूज नहीं थी। महंत शरेआम शराब पीते तथा गुंडा-बदमाश प्रकार के लोग उनके पास थे। अंग्रेज सरकार उनकी पीठ पर पूरी तरह खड़ी थी, जो उनसे इच्छानुसार काम करवा रही थी। इसकी उदाहरण हमें १९१४ ई. के बजबज-घाट कामागाटामारू वाले साके तथा १९१९ ई के जलियांवाला बाग के खूनी साके के दोषी जनरल ओडवायर को सरबराह अरूड़ सिंघ ने सिरोपा देकर सम्मानित किया। ऐसे कामों से प्रत्येक सिख दुखी था। महंत और पुजारी श्री हरिमंदर साहिब में दलित आदि वर्ग वालों से कड़ाह प्रसादि की देग स्वीकार नहीं करते थे।

१४ जनवरी, १९४१ ई. को गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब (दिल्ली) की दीवार तोड़कर गवर्नर के घर को सीधा रास्ता बनाया, जिससे सिख हृदयों को भारी ठेस पहुंची। अंग्रेजों के इस

**VPO-ढड्ढे, जिला अमृतसर।*

व्यवहार से सिख बहुत ही परेशान थे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनने से पहले सिंघ सभा लहर, चीफ खालसा दीवान, खालसा दीवान, खरा सौदा बार, खालसा बरादरी आदि संस्थाएं अस्तित्व में आईं। इन जत्थेबंदियों ने भी बहुत कोशिशें कीं कि किसी तरह गुरुद्वारों का प्रबंध सिखों की अपनी कमेटी के पास आए। इनकी कोशिशों का सदका ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई। आखिर १२ अक्तूबर, १९२० ई को श्री अकाल तख्त साहिब पर सिखों ने कब्जा कर लिया। सबसे पहले मोर्चा गुरुद्वारा चुमाला साहिब, लाहौर में लगाया गया जो लम्बे झगड़े के पश्चात २१ सितंबर, १९२० को कब्जा कर लेने के साथ ही सफल हुआ।

आखिर सिखों ने सभी गुरुद्वारों का प्रबंध अपने हाथों में लेने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब से हुक्मनामा डॉ. गुरबख्श सिंघ जी, जो ९ सदस्यीय कमेटी के सदस्य थे, ने जारी करके १५ नवंबर, १९२० को प्रात: ९ बजे सरबत्त खालसा का इकट्ठ बुलाया, जो श्री अकाल तख्त साहिब के सामने हुआ तथा इसमें श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों के प्रबंध के लिए गंभीर विचार-विमर्श करके एक नुमाइंदा पंथक कमेटी चुनी गई। इस पंथक कमेटी के चयन से पूर्व समूह सिख जगत को नुमाइंदे चुनकर भेजने के लिए कहा गया,जो अमृतधारी हों, पांच बाणियों के नित्यनेमी हों, पांच ककारों के धारक हों, रहितवान हों तथा अमृत वेला को उठने वाले हों। नुमाइंदों का चयन इस प्रकार करके भेजने के लिए कहा गया:

प्रत्येक तख्त साहिब की ओर से	५ सदस्य
गुरुद्वारा साहिब की ओर से	१
खालसा जत्थों की ओर से	५ फीसदी
स्कूलों-कालेजों की ओर से	६
प्रबंधक कमेटियों में से	६
उस्तादों में से	८
विद्यार्थियों में से	७
सिख रसालों में से	२
सिख पलटनों में से	२
पूरी सिख पलटनों में से	५
निहंग सिंघ	५ फीसदी

इस ढंग से अपने नुमाइंदे चुनकर इस सरबत्त खालसा की एकत्रता में भेजने को कहा गया और यह भी कहा गया कि इस कमेटी का निर्णय समूह सिख संगत को सुनाया जाएगा जिसमें सभी सिख श्रद्धालु शामिल हों। १५ नवंबर, १९२० को सरबत्त खालसे की एकत्रता हुई जिसमें लगभग १५० सदस्य चुने गए। कुछ अन्य सदस्य मिलाकर १७५ सदस्यों की कमेटी बनाई गई। कमेटी का पहला अध्यक्ष स. सुंदर सिंघ मजीठिया को बनाया गया तथा उपाध्यक्ष स. हरबंस सिंघ अटारी को बनाया गया। उस समय श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध जो बहुत बिगड़ा था, वह स. सुंदर सिंघ जी रामगढ़िया, स. दान सिंघ जी विछोआ, स. जसवंत सिंघ जी झबाल आदि आगुओं के यत्नों का सदका ठीक हो गया। सभी गुरुद्वारों को अपने अधिकार में करने के लिए १९२५ ई को गुरुद्वारा एक्ट बनाया गया। गुरुद्वारा एक्ट पास होने से पूर्व गुरुद्वारा ननकाणा साहिब महंतों से आजाद कराने के लिए २० फरवरी, १९२१ को साका घटित हुआ। श्री दरबार साहिब का चाबियों का मोर्चा, गुरू का बाग का मोर्चा, जैतो का मोर्चा आदि साके घटित हुए। १९२४ को जैतो का मोर्चा गुरुद्वारा एक्ट बनने के बाद समाप्त हो गया। सिखों के जबरदस्त संघर्ष सदका गुरुद्वारा एक्ट १९२५ में पारित किया गया। गुरुद्वारा एक्ट पारित होने

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

बुद्धि विनाशक क्रोध

*-डॉ. नरेश**

क्रोध साधारण आदमी की प्रवृत्ति है। जिस आदमी में जितना अधिक अहम् होता है, उसको उतना ही अधिक क्रोध आता है। क्रोध का मूल कारण अहम् ही है। मेरी बात क्यों नहीं मानी, मेरी परवाह क्यों नहीं की, मुझे पहचाना क्यों नहीं, मेरी उपेक्षा कैसे की गई, मुझसे यह कैसे कह दिया आदि भाव ही क्रोध के मूल कारण हैं। इनमें से कोई भी भाव उस समय उदय होता है, जब हमारे अहम् को ठेस पहुंचती है। अहम् को व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन कहा गया है। गुरू नानक साहिब ने तो क्रोध को 'नाम' का विरोधी तत्त्व तक कहा है:

हउमै नावै नालि विरोधु है
दोइ न वसहि इक ठाइ ॥ *(पन्ना ५६०)*

यदि अहम् ही क्रोध का जन्मदाता है तो क्रोध को वश में करने की सारी कोशिश उस समय तक बेकार रहेगी, जब तक उसके सृजनकर्ता अहम् के प्रति चेतना नहीं जागती।

क्रोध बुद्धि विनाशक है। क्रोध की अवस्था में मनुष्य की सोच उसका साथ छोड़ देती है। शरीर में बढ़ी उत्तेजना के कारण ज्ञानेन्द्रियां सुप्तावस्था में चली जाती हैं। क्रोध में आदमी उचित-अनुचित का अंतर भूल जाता है। पता नहीं क्या-क्या कह देता है, क्या-क्या कर डालता है। हिंसा तो बिना क्रोध के पैदा ही नहीं होती। क्रोध आता है तो हिंसा जन्म लेती है। यह हिंसा बच्चे के मुंह पर थप्पड़ मारने से लेकर कत्लेआम तक फैलती है, लेकिन बिना क्रोध के इसका अस्तित्व ही नहीं है। क्रोध से बचने का स्थाई साधन अहम् के प्रति चैतन्य होकर अहम् की अधीनता स्वीकार करने से इनकार करना है। क्रोध आने पर यदि तत्काल यह विचार सामने रख लिया जाए कि क्रोध का कारण मेरा आहत अहम् है तो क्रोध का वेग शांत हो सकता है। इसका अभ्यास करने के लिए अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा। बात न माने जाने पर क्रोध आते समय यह नहीं सोचना है कि मेरी बात न मानने की उसकी हिम्मत कैसे हुई बल्कि उस पर तरस करना है कि मैं तो उसका भला कर रहा था, लेकिन उस बेचारे को मेरी बात की समझ ही नहीं पड़ी।

आधे भरे हुए घड़े को आशावादी सोच 'आधा भरा' तथा निराशावादी सोच 'आधा खाली' कहेगी। जो है, उसकी कीमत पहचानना भली सोच है। जो है, उसके लिए परमात्मा का शुक्र करना क्रोध से बचने का सरल उपाय है। ऊपर की ओर देखकर नहीं, नीचे की ओर देखकर संतोष आता है। अपने से अधिक अमीर, सत्ताधारी, समर्थ व्यक्ति के प्रति क्रोध-भाव जगाए रखने की बजाय अपने से गरीब, बलहीन, असमर्थ लोगों की ओर देखने से दया भाव का उदय होता है और लाखों-करोड़ों लोगों के साथ संवेदना का संबंध बनता है। बात साधारण लोगों की भीड़ में से निकलकर आत्म-चिन्तन करने की है। हर बार क्रोध कर-करके पछताते रहना है या इस शत्रु से सदा-सदा के

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९*

अभिशप्त कन्या-भ्रूण हत्या—कारण एवं निवारण

-स. सुरजीत सिंघ*

'सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान' के आदर्श वाले देश भारत में जहां सबसे पहले नारी-शक्ति को पहचाना गया वहीं हमारी सामाजिक परम्परा एवं क्रिया-कलाप, दैनिक व्यवहार में सकारात्मक नहीं हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण निरन्तर बढ़ती कन्या-भ्रूण हत्याएं हैं। दाम्पत्य जीवन घर, परिवार, समाज और देश की प्रमुख कड़ी होती है जिसके अन्तर्गत महिला-पुरुष की जनसंख्या संतुलित होना अति आवश्यक है। नारी प्रकृति का वह अनमोल हीरा है जो मां के रूप में जीवन निर्मात्री है, किन्तु आश्चर्य है कि 'जन्मी-अजन्मी' निर्दोष बालाओं के कत्लेआम के कुकृत्य में हम इतने बर्बर, हृदयहीन, लज्जाहीन एवं अपराधी होते जा रहे हैं जिसका हमारे पास कोई उत्तर नहीं है। 'स्टेट ऑफ वर्ल्ड फंड २०००' की गणनानुसार एशिया की कम से कम ७ करोड़ बालिकाएं जिनके जीवित होने की संभावना थी, वे लिंग आधारित भ्रूण हत्याओं के परिणामस्वरूप जीवत नहीं रहीं। भारत की जनसंख्या की राष्ट्रीय औसत दर ० से ६ वर्ष की आयु में १००० लड़कों पर मात्र ९२७ लड़कियां ही हैं जबकि कुछ प्रान्तों में तो यह औसत दर घटकर लगभग ८०० तक जा पहुंची है जो कि भविष्य के लिए खतरनाक संकेत है।

कन्या-भ्रूण हत्या का कारण : विज्ञान का लिंग परीक्षण में सदैव दुरुप्रयोग हुआ है। सदियों से चली आ रही सामाजिक कुरीतियां एवं अंधविश्वास ही प्रमुख कारण हैं, जैसे लोभी दहेज प्रथा, मिथ्या रूढ़िवादिता, लड़के से वंशवृद्धि का मिथ्यावाद, मरणोपरांत मोक्ष-प्राप्ति के लिए पुत्र की कामना अथवा वृद्धावस्था में पुत्र के सहारा बनने की इच्छा इत्यादि, किंतु बलि तो सदैव कन्या की ही होती रही है। आश्चर्य है कि कन्या के जन्म से पूर्व ही अन्याय का क्रम उस पर टूट पड़ता है जो आगे थमने का नाम ही नहीं लेता, किन्तु यह प्रमाणित सत्य है कि कई परिवारों में पुत्रियां ही माता-पिता की सेवा करते हुए आदर्श प्रस्तुत कर उनके बुढ़ापे का सहारा बनती आई हैं। लड़कों की अपेक्षा लड़कियां स्वभाव से अधिक भावुक, संवेदनशील, कोमल एवं सेवाभावी होती हैं।

कन्या-भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम : नारी तो जननी है और यदि जननी का इस प्रकार से विनाश होने लग जायेगा तो सृष्टि के सर्वनाश को कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि नारी का अपमान ही अभिशाप बन जायेगा। बालिकाओं की घटती जनसंख्या से अभिशप्त कन्या विक्रय प्रथा का प्रसार होने लगेगा एवं अन्य सामाजिक कुरीतियां—दुराचार, अनाचार, व्यभिचार की सामाजिक दुष्प्रवृत्ति से राष्ट्रीय चेतना एवं सामाजिक ढांचा बुरी तरह से चरमराने लग जायेगा।

संभ्रांत एवं साक्षर दोषी : राष्ट्रीय जनगणना के आंकड़े प्रमाणित करते हैं कि कन्या-भ्रूण हत्या का पाप भारत के निर्धन प्रान्तों की अपेक्षा समृद्ध प्रान्तों में अधिक हो रहा है किन्तु है सब इसके अपवाद ही। एक तरफ तो विकास, शिक्षा

*****५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)

और विज्ञान महिलाओं को गतिशील, प्रगतिशील एवं समृद्ध बना रहे हैं जबकि इसके विपरीत यही समृद्धता कन्या-भ्रूण हत्या जैसे पाप को बढ़ावा दे रही है। अशिक्षा एवं गरीबी के दोष की बातें करना असंगत ही प्रतीत होता है क्योंकि कन्या-भ्रूण हत्या करवाने वाले विशेषकर साक्षर, सम्पन्न एवं शिक्षित होते हैं और वहीं इस कुकृत्य को करने वाला चिकित्सा जगत तो शिक्षित है ही, किन्तु अधिक धन-प्राप्ति की लालसा ही चिकित्सीय सेवा की सफेदी को कलंकित करते हुए काला स्याह कर रही है। यह पाप निस्संदेह गांवों-कसबों से लेकर नगरों-महानगरों तक व्यापारिक स्तर पर खुलेआम अंतहीन लालसा पाले चल रहा है जिसमें दलालों तक की व्यवस्था सुगमता और सन्देह से बचने के लिए हो रही है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में लिखा है *'. . . माता धरति महतु'* अर्थात् धरती को विशाल हृदय वाली माता कहा है। खेद इस बात का है कि सिख कहलवाने एवं इन पंक्तियों से अवगत लोग भी कन्या-भ्रूण हत्या से बच नहीं पाये।

नारी पर बढ़ता उत्पीड़न : नारी पर निरंतर हो रहे अन्यायों एवं अत्याचारों के बढ़ते ग्राफ कन्या-भ्रूण हत्याओं को प्रेरित करते हुए उनके हितों एवं सुरक्षा हेतु बनाये गये नियमों एवं कानूनों की सार्थकता पर ही प्रश्न-चिन्ह लगा रहे हैं। भारत में प्रतिदिन औसतन ४२ अपराध बलात्कार के, १९ महिलाओं की मृत्यु लोभी दहेज-प्रथा के कारण, ११५ महिलाएं यौन उत्पीड़न की शिकार, ३२ का अपहरण एवं ८५ महिलाओं से छेड़छाड़ की घटनाएं दर्ज होती हैं। यद्यपि वास्तविक संख्या तो कहीं अधिक है क्योंकि सामाजिक लोक-लज्जा के कारण कई तो अप्रत्यक्ष ही रह जाती हैं। नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो की गणनानुसार २१वीं सदी में प्रति १०० मिनट में दहेज के लिए एक महिला की हत्या हो रही है, प्रति ३८ मिनट में महिला उत्पीड़न का एक अपराध घटित हो रहा है, प्रति ५४ मिनट में एक बलात्कार एवं प्रति ७ मिनट में कहीं भी महिला के विरुद्ध किया गया एक अपराध दर्ज हो रहा है। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों की संख्या निरंतर बढ़ती हुई वार्षिक औसत २ लाख से ऊपर एवं दहेज मृत्यु की वार्षिक औसत ९ हजार से ऊपर जा पहुंची है। यह भी प्रमाणित सत्य है कि देश के किसी न किसी कोने में प्रति घंटा एक युवा विवाहिता को या तो मार दिया जाता है अथवा जबरन मौत के मुंह में धकेल दिया जाता है।

बढ़ते अल्ट्रासाउंड सेंटर : कन्या-भ्रूण हत्या की रोकथाम हेतु सरकार ने सन् १९९४ में नियम बनाकर भ्रूण परीक्षण कानूनी अवैध एवं दण्डनीय अपराध घोषित कर रखा है किन्तु फिर भी देश भर में बिना रोक-टोक एवं भय रहित यह घृणित कार्य किया जा रहा है और फल-फूल रहा है। एक अनुमान के अनुसार देश भर में २७,००० अल्ट्रासाउंड सेंटर कार्यरत हैं जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। अल्ट्रासाउंड तकनीक का सर्वाधिक दुरुप्रयोग लिंग परीक्षण हेतु हो रहा है जो कि एक गंभीर समस्या है जबकि इसका उद्देश्य तो गर्भ में पल रहे शिशु के समुचित विकास, बीमारी एवं अंगों की विकृति का पता लगाना ही होता है। जनरेटर वाली अल्ट्रासाउंड मशीन लेकर चलते-फिरते क्लिनिक भी इस घृणित कार्य में योगदान करते हुए देखे जा सकते हैं।

मां की ममता एवं पिता का स्नेह मृत : आश्चर्य है कि कन्या-भ्रूण हत्या में अपना ही खून करने में पत्थर-दिल परिवार वालों को बिल्कुल भी लज्जा नहीं आती और न ही वे खूनी बनने से भयभीत होते हैं। कन्या-भ्रूण

हत्या का कुकृत्य करने में क्या मालूम परिवार वालों की संवेदनाएं कहां मृत हो जाती हैं, जहां मां की ममता जागती नहीं और पिता का स्नेह सो जाता है! आज का समाज आधुनिक होने का दावा तो अवश्य करता फिरता है किन्तु वास्तविकता तो कुछ और ही कह रही है, जहां नारी के गर्भ में कन्या-भ्रूण हत्या के रूप में बेरहमी से भ्रूण हत्या की जा रही है जो किसी भयंकर त्रासदी को निमंत्रित करने से कम नहीं है। भारत के आई. एम. ए के सर्वे के अनुसार प्रतिवर्ष ५० लाख कन्या-भ्रूण हत्याएं हो रही हैं।

चिकित्सा जगत की शिथिलता : चिकित्सा जगत को आवश्यक, पवित्र एवं सेवाभावी माना जाता है जहां मानव सेवा का उद्देश्य इसके मूल में रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में पारंगत होने के उपरान्त चिकित्सा स्नातक से अपेक्षा कर ली जाती है कि वह अब सच्चे हृदय से मानव सेवा करेगा किन्तु आश्चर्य है कि चिकित्सा जगत की नीतियों एवं सिद्धान्तों की बात करना तो दूर रहा कहीं-कहीं तो चिकित्सक धन की अति लालसा का शिकार होकर गैरकानूनी 'कन्या-भ्रूण हत्या' जैसे घृणित कार्य करने से भी भयभीत नहीं होता और समस्त नैतिकता, मर्यादायों एवं मानवीय संवेदनाओं को तिलांजलि दे इस कुकृत्य में बाखूबी लिप्त हो जाता है। कन्या-भ्रूण नष्ट करवाने वालों से चोरी-छुपे मनमाना धन तो वसूल किया ही जाता है बल्कि अनाधिकृत गर्भपात लापरवाही के कारण कभी-कभी जीवनपर्यन्त दुखदायी एवं अभिशाप भी बन जाता है।

कन्या-भ्रूण हत्या कानून एवं दुरुप्रयोग : कन्या-भ्रूण हत्या रोकने के लिए सरकार ने 'कन्या-भ्रूण हत्या नियमन एवं दुरुप्रयोग विधेयक १९९४' का कानून १ जनवरी १९९६ से लागू कर रखा है जिसके अन्तर्गत जन्म से पूर्व बालिका-हत्या के लिए लिंग परीक्षण करना-करवाना, घोषणा करना, सहयोग देना, विज्ञापन करना इत्यादि को दण्डनीय अपराध घोषित कर रखा है जिसके उल्लंघन पर ३ से ७ वर्ष तक की जेल और १० हजार से १ लाख रुपये तक के अर्थदण्ड का प्रावधान है। अधिनियम में गंभीर रोगों से पीड़ित महिलाओं एवं न्यूनतम आयु की बालिकाओं के अल्ट्रासाउंड परीक्षण पर छूट है। नियमानुसार दोषी चिकित्सक का पंजीकरण निरस्त किया जा सकता है। दण्डनीय अपराध होने के उपरान्त भी यह पाप दिन-प्रतिदिन तेजी से बढ़ता ही जा रहा है किन्तु आश्चर्य है कि इस कुकृत्य को करने वाले चिकित्सा क्षेत्र में हुई सजाओं का प्रतिशत तो नगण्य ही है। संयोगवश यदि कोई शिकायत प्राप्त हो भी जाती है तो उसे ठण्डे बस्ते में डाल दिया जाता है और इस प्रकार से सम्पूर्ण परिदृश्य ही सन्देहास्पद एवं चिंताजनक परिलक्षित हो रहा है।

सुझाव एवं निवारण : बढ़ती कन्या-भ्रूण हत्या के भयानक परिणामों को हम वास्तव में समझ नहीं पा रहे हैं अथवा आंखों पर काली पट्टी बांध, जान-बूझकर अन्धे बन समझना ही नहीं चाहते हैं, जबकि विकराल रूप धारण करती इस राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए जन-जागरूकता के साथ-साथ सकारात्मक सोच द्वारा समय रहते ठोस एवं प्रमाणिक प्रतिरोधात्मक कदम उठाने होंगे अन्यथा पछताने की स्थिति स्पष्ट रूप से बनती दृष्टमान हो रही है। सिख धर्म की सर्वोच्च पीठ श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा कन्या-भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराई का पूर्ण निषेध करते हुए धार्मिक पत्रिकाओं एवं जन-जागरण द्वारा यह प्रचारित किया जा रहा है कि बालक-बालिका समान है और कन्या का जन्म मानव के लिए किसी वरदान से कम नहीं

है। इस सन्दर्भ में कानून की पुन: समीक्षा कर इसे बिना भेदभाव एवं सख्ती से लागू करना चाहिये। 'विश्व महिला दिवस' एवं 'विश्व मातृत्व दिवस' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस सामाजिक कलंक के विरुद्ध रैलियों, भाषणों एवं संगोष्ठियों के द्वारा मीडिया की सहभागिता से राष्ट्रीय स्तर पर 'जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम' में 'जनसंख्या घटाओ-कन्या बचाओ' अभिमान को प्रचारित करते हुए कन्या-भ्रूण हत्या जैसे सामाजिक अभिशाप से राष्ट्र को सदैव के लिए मुक्त किया जा सकता है, जो कि २१वीं सदी की राष्ट्रव्यापी समस्या बनती जा रही है। ■

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी . . . *(पृष्ठ ३० का शेष)*

पर पुरानी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समाप्त हो गई। उसकी जगह गुरुद्वारा एक्ट के मुताबिक नई गुरुद्वारा कमेटी का चयन सरकारी आदेशों द्वारा हुआ। इस कमेटी का क्षेत्र के हिसाब से निर्वाचन हुआ। ११९ सदस्य निर्वाचन में आए, जिनमें सिख रियासतों की ओर से १६ सदस्य नामजद किए गए तथा १४ अन्य सदस्य शामिल करके कुल १४९ सदस्य हो गए। १९२५ ई के गुरुद्वारा एक्ट के अधीन गुरुद्वारा सेंट्रल बोर्ड की पहली एकत्रता जिलाधिकारी, अमृतसर के निमंत्रण पर बाकायदा सूचित करने पर ४ सितंबर १९२६ की सुबह ११ बजे अमृतसर के टाऊन हाल स्कूल में हुई, जिसमें १३५ सदस्य उपस्थित थे। यह मीटिंग जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई। इसमें सरदार मंगल सिंघ एडीटर (अकाली) को इस एकत्रता का चेयरमैन सर्व-सम्मति से चुना गया। एक्ट की धारा ४३ के अनुसार ढाई बजे श्री गुरू ग्रंथ साहिब की हजूरी में मीटिंग करके १४ सदस्य नामजद करने के लिए तज़वीजें मांगी गईं, सर्व-सम्मति से सदस्य चुने गए। इस प्रकार सेंट्रल गुरुद्वारा बोर्ड के कुल सदस्यों की संख्या १५० हो गई।

गुरुद्वारा एक्ट के अनुसार बोर्ड की पहली एकत्रता १ अक्तूबर, १९२६ को ११ बजे टाऊन हाल, अमृतसर में हुई, जिसमें सभी सदस्य उपस्थित थे। श्री गुरू ग्रंथ साहिब की हजूरी में अरदास होने के पश्चात सरदार मंगल सिंघ जी अध्यक्ष तथा मास्टर तारा सिंघ जी उपाध्यक्ष और पर्चियों द्वारा ८ कार्यकारिणी सदस्यों का चयन किया गया। इस एकत्रता में कार्यकारिणी के स्थापित होने पर सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पारित कर नए सेंट्रल बोर्ड की जगह इस बोर्ड का नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रखा गया। इस प्रकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई, जो तब से लेकर अब तक बड़ी सफलता से गुरुद्वारों की प्रबंधकी जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ धर्म प्रचार के क्षेत्र एवं विद्या के क्षेत्र में अनगिनत स्कूल-कालेज चलाकर प्रशंसनीय भूमिका निभा रही है। ■

बुद्धि विनाशक क्रोध *(पृष्ठ ३१ का शेष)*

लिए छुटकारा पाना है, इसका निर्णय जरूरी है। यदि क्रोध से मुक्ति का संकल्प बनाना है तो अहम् के प्रति चैतन्य रहने का अभ्यास शुरू कीजिए अन्यथा आप उन लोगों में से तो हैं ही जिनके विषय में गुरू नानक साहिब ने कहा है:

हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥

(पन्ना ६३)

■

ज्योतिषियों-तांत्रिकों के महाजाल से बचना होगा!

-श्रीमती प्रतिभा शर्मा, श्री खुशी राम शर्मा*

अपने भविष्य को जानने की अभिलाषा और उसके सुखमय होने की कामना आदि काल से ही मानव मन को उद्वेलित करती रही है और आज भी कर रही है। हर व्यक्ति पहले से ही यह जान लेना चाहता है कि भविष्य में उसके जीवन में कौन-कौन सी सुखद संभावनाएं हैं। वह यह भी जान लेना चाहता है कि आगामी दिनों में उसको किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है ताकि वह समय रहते इनका उपचार कर सके और चिंता-मुक्त होकर जी सके। इसके लिए उसने कभी ज्योतिष का सहार लिया है, कभी हस्तरेखा-ज्ञान का और कभी जादू-टोने का। संतों, महापुरुषों और देवी-देवताओं की भविष्य-बाणी में भी उसका अटूट विश्वास रहा है। यह विश्वास आज भी उसके मन में जीवित है। धीर-धीरे यह विश्वास एक गहरी आस्था का रूप धारण कर गया है और मानव स्वभाव में घुल-मिल गया है। उसकी सोच, मानसिकता और उसके भावात्मक प्रवाह पर इसका गहरा प्रभाव है। ज्योतिषियों के पास टेवा, जन्म-पत्री बनवाने की प्रथा भी व्याप्त है। विवाह आदि के सही योग को निश्चित करने के लिए ज्योतिषियों के पास जाना एक साधारण सी बात बन गई है, परन्तु जब यह आस्था अंधविश्वास में बदल जाती है तो यह एक मनोवैज्ञानिक और भावात्मक समस्या को जन्म देती है। यह भगवान में आस्था की कमी का कारण बनती है। कुछ समझते हैं कि हमारा जीवन शुक्र, शनि, बुध, मंगल आदि ग्रहों की गति और स्थिति से बंधा हुआ है। हम इन ग्रहों को खुश करने के लिए कई प्रकार के अस्वस्थ कर्म-कांड का सहारा लेते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि संसार और हमारा जीवन परमात्मा द्वारा संचालित हो रहा है। उसकी करनी में हमारी आस्था और हमारे विश्वास में कमी आ जाती है। हम कई प्रकार के किन्तु-परन्तु करने लगते हैं। यह भ्रम पाल लेते हैं कि ग्रहों की पूजा-अर्चना करने से परमात्मा द्वारा लिखित भाग्य में परिवर्तन लाया जा सकता है, जो हमें और निराशा की ओर ले जाता है। हम मन में विचलित और अशांत रहते हैं और मानसिक तौर पर सदा प्रयत्नशील रहते हैं कि किसी तरह विधाता द्वारा लिखे गए भाग्य को बदल लें और अपनी इच्छा एवं सुख-सुविधा के अनुसार रूप दे लें।

आजकल बहुत से लोग ज्योतिषियों और तांत्रिकों के चंगुल में फंस रहे हैं। टी.वी. पर राशियों के अनुसार भविष्य बताने की परंपरा सी बनती जा रही है। अनेक प्रकार के ज्योतिषि अपने ज्ञान का व्याख्यान करते नहीं थकते। कई ज्योतिषि तो भविष्य बताने के लिए बड़ी धनराशि की भी मांग करते हैं। लोग प्राय: उनके चंगुल में फंस जाते हैं। ऐसा आम लोग ही नहीं करते बड़े-बड़े राजनीतिक, प्रशासनिक अधिकारी, उद्योग-व्यापार से संबंधित शक्तिशाली पढ़े-लिखे लोग भी इस अंधविश्वास में फंसते जा

*गुरू नानक मार्केट, जालंधर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५

रहे हैं। बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में बड़े-बड़े ज्योतिषियों का बोलबाला था। उसके दर पर कई तथाकथित नायक और महानायक नत्मस्तक होते थे। ज्योतिषियों के दरवाजे पर वे याचनापूर्ण दस्तक देते रहते हैं। वे उनके बताए उपायों का अंधा अनुसरण करते हैं। हमारे समाज और राजनीतिक नेताओं एवं नायकों का इस प्रकार का व्यवहार साधारण लोगों को बहुत गलत संदेश देता है, क्योंकि समाज आंखें मूंद कर इनका अंधा अनुसरण करता है। आज के वैज्ञानिक युग में, अवैज्ञानिक व्यवहार को किसी भी सूरत में सही नहीं ठहराया जा सकता। हमारे गुरू साहिबान व भक्त साहिबान ने इस प्रकार के अंधविश्वास का अपनी बाणी में प्रतिरोध किया और इसकी निंदा-भर्त्सना की है, भ्रम और वहम की जगह सच्चे विश्वास और आस्था को प्रोत्साहित किया है:

-दानु देइ करि पूजा करना ॥
लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥
जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥
तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥१॥
ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥
निरापराध चितवहि बुरिआई ॥१॥रहाउ॥
अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥
निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥
माइआ मूठा चेतै नाही ॥२॥
भरमे भूला बहुती राही ॥
बाहरि भेख करहि घनेरे ॥
अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥
अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥
ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥३॥
मूरख बामण प्रभू समालि ॥
देखत सुनत तेरै है नालि ॥
कहु नानक जे होवी भागु ॥
मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥४॥ (पन्ना ३७२)
-कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥
(पन्ना १३७७)

इस प्रकार का अंधविश्वास हमारी मानसिक शक्तियों को कमजोर करता है। इम अपनी त्रुटियों और कमियों को नहीं देखते, आत्म-विश्वास करना हम भूल जाते हैं। हम समझते हैं कि जो कुछ भी हमारे जीवन में बुरा हो रहा है उसमें हमारा कोई दोष नहीं, सारा दोष ग्रह-चाल का है या फिर किसी तान्त्रिक द्वारा किए गए जादू-टूने से हुआ है। हम अपनी कमजोरियों, त्रुटियों को दूर करने के बजाए ज्योतिषियों-तांत्रिकों के पीछे भागने लगते हैं और उनसे अपने ग्रहों को अपने पक्ष में करने के उपाय पूछते हैं। तांत्रिकों के पास जाना भी मानसिक व्यवहार का अंग बन गया है। यह कार्य-विधि बन गया है। चाहिए तो यह कि हम अपनी कमियों-कमजोरियों को जानें, उनको दूर करने के लिए अपनी मानसिकता में बदलाव लाएं, जो हम नहीं करते।

ज्योतिषियों और तांत्रिकों में अंधविश्वास हमें यथार्थ और वस्तु-स्थिति का सामना नहीं करने देता। हम जीवन से पलायन करने लगते हैं, मुश्किलों से जूझना छोड़ देते हैं। कई बार यह अंधविश्वास पारिवारिक और अंतर-पारिवारिक कलह-क्लेश को जन्म देता है, अड़ोस-पड़ोस में दुश्मनी का कारण बनता है। यदि हम यह समझते हैं कि दुख का कारण जादू-टोने से है तो लड़ाई और मानसिक हिंसा का होना स्वाभाविक ही है। जादू-टोने के भ्रम में कई जिंदगियां तबाह हो जाती हैं। डाक्टरी इलाज करवाने के बजाय हम रोग का इलाज बाबे-

तांत्रिकों के पास जाकर ढूंढते हैं, जो किसी भी सूरत में ठीक नहीं। हमारे गुरुओं ने इस अंधविश्वास को पूर्ण रूप से नकारा है।

ज्योतिषियों और तंत्रिकों के पास जाना अपने आप को गुरबाणी से दूर ले जाने के तुल्य है जो हमारी आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक सेहत के लिए हानिकारक है।

गुरबाणी में कर्मकाण्ड व पाखंड की बहुत निंदा की गई है। श्री गुरू नानक देव जी ने तो परमात्मा में आस्था और विश्वास को ही शुद्ध जीवन-यापन के लिए उत्तम मार्ग कहा है। गुरू जी द्वारा ब्राह्मण की जो कसौटी निर्धारित की गई है वह सोचने का विषय है कि आज के ब्राह्मण, पंडित, ज्योतिषि, टेवा, पत्री आदि बनाने तथा हस्त-रेखाओं को देख कर लोगों को चक्रों में डालकर लूटने वालों पर यदि यह कसौटी लगाई जाए तो वे कहां खड़े हो सकेंगे? ब्रह्म की विचार व चिंतन करने वाला, प्रभु-नाम जपने वाला, संयम से जीवन-यापन करने वाला, सुशील व संतोष का धर्म अथवा कर्त्तव्य निभाने वाला ही गुरू जी की निगाहों में वास्तविक ब्राह्मण है। वह ब्राह्मण न स्वयं बंधनों में बंधेगा और न दूसरों को बांधेगा, वह तो जीवित अवस्था में ही मुक्त अवस्था को प्राप्त होता है। यदि कोई ऐसा ब्राह्मण है तो वह सचमुच पूज्य हो सकता है:

सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥
जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥
सील संतोख का रखै धरमु ॥
बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥
सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ (पन्ना १४११)

तीसरे गुरू श्री गुरू अमरदास जी लोगों की पत्रियां बनाने वाले ब्राह्मण को अपने मन की पत्री का अध्ययन करने का सुझाव देते हुए, परोक्ष रूप से पत्रियां बनवाने वाले लोगों को व्यापारी वृत्ति वाले ब्राह्मण के जाल से बचने हेतु प्रेरणा कर रहे हैं:

मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥
सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु बीचारु ॥ (पन्ना १०९३)

■

आपका पत्र मिला

समस्त शहीदों को प्रणाम

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका का अंक मिला। अंक में आस्था तो आदि से अंत तक झांकती है साथ ही जो ऐतिहासिक तथ्य उजागर किये गये हैं उन्हें जान कर मन करता है कि संपादक और लेखक दोनों को दौड़कर प्रणाम कर लूं।

गत अंकों में आपने पंचम पातशाह श्री गुरू अरजन देव जी की जो जानकारी दी है आज के युग में सर्वथा जानने योग्य है और बलिदान अनुकरण योग्य है। शहीदों ने जो बलिदान किये हैं उनके पीछे इन्हीं महपुरुषों की सतत् प्रेरणा है। मैं स्मस्त शहीदों को प्रणाम निवेदित करता हूं। वे सब के सब धन्य हैं, प्रणम्य हैं।

-डॉ. नागेन्द्र
प्रभादीप, १२, इन्दिरा कालोनी, रामपुर।

■

गुरबाणी चिंतनधारा-१७

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

नमसतसतु देवै ॥ नमसतं अभेवै ॥
नमसतं अजनमे ॥ नमसतं सुबनमे ॥२१॥

उस परमात्मा के विलक्षण स्वरूप को नमस्कार करते गुरदेव पातशाह जी का चिन्तन है कि हे अकाल पुरख परमात्मा! तू देव अर्थात् पूजनीय है। तेरे इस उज्जवल देदीप्यमान प्रकाश पुंज स्वरूप को नमस्कार है। तेरे अभेद अर्थात् जिसका कोई भेद न पा सके ऐसे स्वरूप को नमस्कार है। इसी अभेद स्वरूप का वर्णन गुरू पातशाह ने 'अकाल उसतति' में भी किया है:

आदि अनंत अगाधि अद्वैख सु भूत भविक्ख भवान अभै है ॥
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥

हे ईश्वर! तेरा अंत किसी ने नहीं पाया। तुमने जितना-जितना कहने की जिसे समर्थता बख़्शी है, जितना समझने की सूझ बख़्शी है उतना ही कह कर व समझ कर वह इस दुनिया से चला गया है।

हे ईश्वर! तू सृष्टि के जीवों की तरह योनियों में नहीं भ्रमता अर्थात् तू जन्म-मरण से परे है और तू सुंदर स्वरूप वाला है। तेरे ऐसे मनमोहक स्वरूप की मनो-मुग्धकारी छवि को भी नमस्कार है।

नमो सरब गउने ॥ नमो सरब भउने ॥
नमो सरब रंगे ॥ नमो सरब भंगे ॥२२॥

हे वाहिगुरू! तुझे नमस्कार है। तेरी पहुँच सब जीवों तक है। तेरा निवास सब भवनों में है। तू सर्वव्यापी है। समस्त जीव तेरे बनाए लोकों में रहते हैं। इस आशय से तू उन सब जीवों में विद्यमान है। प्रकृति का कोई कण ऐसा नहीं जहाँ तू व्यापक नहीं, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है:

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥
(पन्ना २७६)

गुरदेव पातशाह जी का कथन है कि हे समस्त रंगों में व्यापक प्रभु! तुझे नमस्कार है। सभी रूपों में तू शोभायमान है। हे ईश्वर! तू सबको नष्ट करने वाला है। गुरबाणी का फरमान है:

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥
(पन्ना १४२९)

अकाल पुरख महान सृजनकर्त्ता भी है और संहारकर्त्ता भी। गुरबाणी में अनेक उदाहरणों से इस भाव की पुष्टि होती है:

साधो रचना राम बनाई ॥
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ . . .
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ (पन्ना २१९)

इस दृश्यमान जगत में जो कुछ भी है वह

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२०९४*

नष्ट होने वाला है। जो इस गूढ़ तथ्य को गुरू-कृपा से समझ जाते हैं वे इस संसार में निर्लेप भाव से विचरण करते हुए उस सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिशाली परमात्मा का श्वास-ग्रास सुमिरन करते हैं।

नमो काल काले ॥ नमसतसतु दिआले ॥
नमसतं अबरने ॥ नमसतं अमरने ॥२३॥

हे परमात्मा! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू काल का भी काल है अर्थात् तू मौत को भी मार देने वाला है। मौत भी तेरे अधीन है। तू रहमतों का सागर है। हे कृपालु स्वरूप परमात्मा! तुझे नमस्कार है। परमात्मा के दयालु स्वरूप को गुरबाणी में बारंबार दर्शाया गया है, यथा:

साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ (पन्ना ६११)

हे प्रभु! तेरा कोई एक विशेष रंग नहीं है, जैसा कि गुरबाणी में पंचम पातशाह फरमान करते हैं:

रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥
(पन्ना २८३)

रूप, रेख, रंग से परे वह परमात्मा जिसे समझ बख्शता है उसे ही यह तथ्य समझने की समर्थता आती है। गुरदेव फरमान करते हैं, 'नमसतं अमरने' अर्थात् जिसे मौत भी नहीं मार सकती ऐसे सर्वशक्तिमान परमात्मा को नमस्कार है।

नमसतं जरारं ॥ नमसतं क्रितारं ॥
नमो सरब धंधे ॥ नमोसत अबंधे ॥२४॥

हे मालिक! तुझे इसलिए भी नमस्कार है तू 'जरारं'- बुढ़ापा अर्थात् वृद्धावस्था से परे है। 'जरा' अर्थात् बुढ़ापा 'अरि' अर्थात् शत्रु, जो स्वरूप बुढ़ापे का वैरी है। कहने का अभिप्राय वह परमात्मा ऐसा है वृद्धावस्या जिसे छू नहीं सकती, बुढ़ापा जिसके पास फटकने का हौंसला नहीं कर सकता। वह परमात्मा 'क्रितारं' अर्थात् सबको पैदा करने वाला अर्थात् सृजनकर्त्ता है। सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता तथा समस्त जीवों के धंधे अर्थात् कार्य-व्यवहार चलाने वाला। सचमुच अस्तित्व वाला सत्य स्वरूप, संसार के समस्त बंधनों से परे है अर्थात् दुनिया के सभी बंधनों से मुक्त है। तेरे इस 'पावन' स्वरूप को नमस्कार है।

विचारणीय तथ्य यह है कि उस मालिक की जो रचना है उसमें जीव का अस्तित्व क्या है? यथा लोक-उक्ति है:

पानी केरा बुदबुदा इस मानस की जात।
दिखत ही छिप जात है ज्यों तारा प्रभात।

जीव अपनी किसी भी प्राप्ति का अहंकार करता है। गुरबाणी जीव को उस ईश्वर के बिना, उसकी रहमत के बिना उसकी क्या औकात है, इस हेतु बार-बार आईना दिखाती है, जैसा कि गुरबाणी का फरमान है:

करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥
खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥
(पन्ना ७०६)

उस सर्वशक्तिशाली सत्ता को गुरदेव का बार-बार नमस्कार।

नमसतं त्रिसाके ॥ नमसतं त्रिबाके ॥
नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥२५॥

हे प्रभु! तुझे नमस्कार है कि तू निर्+साक है अर्थात् तू ऐसा है जिसका कोई विशेष रिश्तेदार नहीं है। जैसे कि दुनिया में प्रत्येक जीव का कोई सगा-सम्बंधी होता है, कुछ बहुत करीब के रिश्तेदार और कुछ दूर के। 'त्रिबाक' अर्थात डर रहित। हे ईश्वर! तुझे किसी का भी भय नहीं। तू बेखौफ है। ■

विस्मादी वृत्तांत : १२

और चश्मा फूट पड़ा!

*–डॉ. अमृत कौर**

एक नन्हीं सी बालिका अपने पिता की उंगली पकड़े मन्त्रमुग्ध हुई अपलक नेत्रों से गुरुद्वारा पंजा साहिब के रमणीय सौंदर्य को निहार रही थी। उसे लगा मानो पहाड़ी के दामन में कलकल बहता झरना मधुर स्वर में गा रहा हो। पर्वत की गोदी में बहते और मीठे स्वर में गाते उस झरने को देख कर उसके पिता के मुख से अनायास निकला :

बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ (पन्ना ४६९)

उन्हें लगा मानो गुरू नानक साहिब की मधुर बाणी और भाई मरदाना जी की रबाब के स्वर उस कलकल बहते झरने में घुलमिल गए हों। चारों ओर फैली हरियाली, छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा यह झरना, अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य बिखेर रहा था। यहां तो लिव अपने आप प्रभु-चरणों में जुड़ जाती है। उसे लगा कि उसके पिता की लिव भी प्रभु-चरणों में जुड़ गई है। नन्हीं बालिका ने उनका ध्यान भंग किया—"पिता जी! हम गुरुद्वारा पंजा साािहब पहुंच गए?" "हां बेटी, पहुंच गए।" "तो यहां से आप मुझे मन्नत मांग कर लेकर गए थे?" "हां बेटी, यह गुरू का घर है। यहां सब की मुरादें पूरी होती हैं। जब सात साल तक भी हमारे यहां सन्तान नहीं हुई तो मैं और तुम्हारी मां यहां आए थे कि गुरू जी हमें सन्तान दो, हम उसे आपका सिख बनाएंगे।" "फिर क्या आपकी मुराद पूरी हो गई पिता जी?" "हां, हो गई बेटा, तभी तो तुमने हमारे घर जन्म लिया।" "अच्छा पिता जी, वह पत्थर कहां है जहां पर श्री गुरू नानक देव जी के हाथ का पंजा लगा हुआ है?" "बस बिटिया, पहुंच गए गुरू के घर—यह रहा पंजा साहिब गुरुद्वारा। अच्छा जूते उतारो, सिर ढको और चलो तुम्हें गुरू जी का पंजा दिखाते हैं।"

बालिका के पांव आनंद और उल्लास से पृथ्वी पर नहीं टिक रहे थे। एक शिला पर गुरू जी के हाथ की छाप स्पष्ट अंकुरित दिखाई दे रही थी। उसका माथा अपने आप ही श्रद्धा से झुक गया। कल-कल बहते पानी में टिकी वह शिला जिस पर गुरू जी के हाथ का पंजा लगा था, को उसने स्पर्श किया। शिला को छूकर उसे लगा जैसे कोई मर्मस्पर्शी लहर उसके प्राणों में समा गई हो। एक नवीन स्पन्दन का उसे अनुभव हुआ और आज पचास साल बीत जाने पर भी वह दृश्य उसकी आंखों के सामने ज्यों का त्यों साकार हो उठता है। वह कभी नहीं भूल पाई कि उसका जन्म गुरू-घर की कृपा और आशीर्वाद से हुआ है। सारे का सारा दृश्य उसके मानस पटल पर ज्यों का त्यों अंकित है।

"अच्छा पिता जी, पंजा साहिब की साखी तो सुनाइए! आपने कहा जो था वहां चल कर सुनाएंगे।" "हां बेटी, सुनाऊंगा। पहले गुरुद्वारा साहिब के दर्शन कर लें और प्रसाद ले लें।"

मधुर कंठ से रागी-जन गा रहे थे:

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३*

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥
(पन्ना ४६४)

उसके पिता जी की लिव प्रभु-चरणों में जुड़ गई। उस पर भी कीर्तन का अजीब असर हुआ। उसका भी मन प्रभु-चरणों में जुड़ने लगा।

गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करने के बाद वे दोनों बाप-बेटी चश्मे के पास पहुंच गए। कल-कल ध्वनि से बहता चश्मे का निर्मल जल मानो उनका आह्वान कर रहा था। दोनों चश्मे के किनारे बैठ गए। उसने जी भर कर जल पिया। उसके पिता जी मन्त्रमुग्ध नेत्रों से उस रमणीय स्थान की प्राकृतिक छटा को निहार रहे थे और उनके मुख से बार-बार ये शब्द निकल रहे थे : *बलिहारी कुदरति वसिआ—तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥* सचमुच प्रभु तो प्रकृति में निवास करते हैं।

"अच्छा पिता जी, अब तो आप साखी सुनाएंगे न?"

उन्होंने कहा, "अच्छा बेटी सुनो! यह पहाड़ी देख रही हो न, इस पर वली कंधारी नाम का एक पीर रहता था। उसे अपने ज्ञान और करामातों पर बहुत अभिमान था। उसकी कुटिया के पास पानी का एक चश्मा था परन्तु वह अपने चश्मे से किसी को पानी नहीं पीने देता था।"

"एक बार श्री गुरू नानक देव जी महाराज भाई मर्दाना जी के साथ इस स्थान पर आए। गर्मी का मौसम था और दोपहर का समय। सुबह से चलते-चलते वे थक चुके थे। इस रमणीय स्थान के सौन्दर्य को निहार कर वे वहीं बैठ गए। गुरू जी ने भाई मरदाना जी से कहा, "मरदानिया, रबाब बजा, बाणी आई है।"

"पिता जी यह भाई मरदाना जी कौन थे?" "बेटी, यह भाई मरदाना जी गुरू जी की लम्बी धर्म-प्रचार के लिए की गई यात्राओं में उनके साथी व मित्र थे। वे जिस परिवार से जन्मे थे उसकी जाति को मिरासी जाति कहते हैं और इस जाति को उस समय के समाज में निचले स्तर की माना जाता था। वे हंसमुख और जीवन से भरपूर थे। वे छाया की तरह गुरू जी के साथ रहते। उनके सुख-दुख के साथी भाई साहिब रबाब इतनी मीठी बजाते कि गुरू जी के मुख से निकली बाणी जादू का असर करती। सुनने वालों की लिव अपने आप प्रभु-चरणों में जुड़ जाती। बाबा जी की रबी बाणी से उनके मन की मैल धुल जाती, उनकी आत्मा निर्मल और स्वच्छ हो जाती। वे एक अजीब सकून और शान्ति का अनुभव करते।"

"अच्छा पिता जी, फिर क्या हुआ?"

"भाई मरदाना जी को प्यास लगी। आस-पास कहीं दूर-दूर तक पानी दिखाई नहीं देता था। अब तो तुम यह शहर देख रही हो न हसन अब्दाल, परन्तु उस समय यहां उजाड़ था। गुरू जी ने पहाड़ी की चोटी पर नज़र डाली। गुरू जी ने भाई मरदाना जी को कहा कि इस पहाड़ी पर वली कंधारी की उस कुटिया में जाओ और वहां जाकर पानी पी आओ।

भाई मरदाना जी बड़ी कठिनाई से चढ़कर पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे, प्यास के मारे उनका दम निकला जा रहा था, उस पर दोपहर की गर्मी। उन्होंने वली कंधारी से कहा "मुझे प्यास लगी है, कृप्या अपने चश्मे से थोड़ा सा जल मुझे पीने के लिए दीजिए।" "तुम कौन हो और यहां कैसे आए हो?" "मेरा नाम मरदाना है। मैं गुरू नानक देव जी का साथी हूं। मुझे

प्यास लगी है। मेरे गुरू जी ने मुझे तुम्हारे पास पानी पीने के लिए भेजा है।"

"अच्छा तो तुम गुरू नानक के शिष्य हो। उसकी तो आजकल बड़ी चर्चा है। क्या वह तुम्हें पानी नहीं पिला सकता? यह चश्मा हमने अपनी करामात से पैदा किया है। यदि तुम्हारे गुरू में शक्ति है तो वह तुम्हें पानी पिलाए! नहीं तो मेरे पास स्वयं आए! यदि वह मेरी अधीनता स्वीकार कर ले तो मैं तुम्हें पानी पिला दूंगा!"

भाई जी को वली कंधारी की बातें अच्छी न लगीं, फिर भी उन्होंने संयम रखा। भाई मरदाना जी ने वली कंधारी से बहुत कहा कि "मेरे गुरू संसार का कल्याण कर रहे हैं। मैं उनका निमाणा सा सिख हूं।" परंतु वली कंधारी इसको सुन कर और अधिक कठोर हो गया। उसने पानी न दिया। भाई जी बिना पानी पिए निराश लौट आये।

गुरू जी ने उन्हें दोबारा भेजा और कहा कि उससे अदब से पानी मांगना, कोई अवज्ञा नहीं करना। कहना कि थोड़े से पानी की आवश्यकता है, हमने यहां रहना नहीं है। हम तो कश्मीर जा रहे हैं। भाई मरदाना जी फिर गये परंतु वली कंधारी टस से मस नहीं हुआ। भाई मरदाना जी निराश लौट आये।

श्री गुरू नानक देव जी ने उन्हें तीसरी बार भेजा। भाई मरदाना जी ने नम्रता से पानी मांगा तो वली कंधारी ने ताना दिया, "जिस गुरू के तुम सिख हो क्या वह तुम्हें दो घूंट पानी नहीं पिला सकता?" प्यास से व्याकुल भाई मरदाना जी गुरू जी के पास वापिस आये और कहने लगे, "गुरू जी, आपके चरणों में प्यासा मर जाऊंगा पर अब मैं अभिमानी अहंकारी वली कंधारी के पास पानी मांगने नहीं जाऊंगा!"

"भाई मरदाना जी का चेहरा थकावट और प्यास के मारे मुरझा रहा था। गुरू जी से उनकी व्याकुलता देखी न गई। पिछले दस सालों से वे उनके साथ थे। नदी, पहाड़, जंगल कोई भी तो उनका पग रोक नहीं सके। वे निरंतर उनके साथ यात्राएं करते रहते, कभी कहीं तो कभी कहीं। कितना प्यारा मित्र-सखा है! यह मेरा भाई है। सभी कुछ ही तो है। इनकी रबाब ने धर्म प्रचार के कार्य को रसमय बना दिया है। उस पर इनकी जिन्दादिली। इनकी रबाब की मधुर ध्वनि, इसके रागों की सूझ-बूझ कितनी ऊंची है! रबाब की धुन के साथ उस अकाल पुरख के देश से आई बाणी से तो सज्जन ठग और भूमिए जैसे ठगों की आत्माओं की कालिमा धुल गई थी। उन्होंने भाई जी को कई बार कहा था, मरदानिया! अपने घर लौट जाओ और सुख का जीवन व्यतीत करो। परन्तु उनका तो एक ही उत्तर था, जहां तुम वहां मैं।"

"फिर क्या हुआ? गुरू जी ने भाई मरदाना जी को पानी कैसे पिलाया?"

गुरू जी ने भाई मरदाना जी से कहा "मरदानिया इस पत्थर को उठाओ! ज्यों ही भाई मरदाना जी ने वह पत्थर उठाया पानी का चश्मा कल-कल ध्वनि से फूट पड़ा और निर्मल स्वच्छ जल, धारा का रूप धारण कर बहने लगा।"

"फिर तो भाई मरदाना जी ने खूब पानी पिया होगा?"

"केवल भाई मरदाना जी ने ही नहीं, यह चश्मा तो न जाने कितने थके-मांदे पथिकों की प्यास बुझा रहा है। यह चश्मा गुरू नानक साहिब के हृदय में भाई मरदाना जी के लिए अनन्य प्रेम-लहरों के रूप में फूट पड़ा। यह

चश्मा तो आज भी गुरू नानक पातशाह और भाई मरदाना जी की मित्रता का बखान कर रहा है जो जात-पात की सीमाओं से ऊपर उठ कर मानव का मानव के प्रति सच्चे स्नेह का प्रतीक बन गया है।"

"वाह! वाह! पिता जी बहुत खूब!"

"कुछ समय बाद वली कंधारी को प्यास लगी। ज्यों ही वह चश्मे के पास पानी पीने के लिए आया उसने देखा कि उसके चश्मे का पानी समाप्त हो गया है। उसने पहाड़ी के नीचे झांक कर देखा। उसे कल-कल बहता स्वच्छ पानी का चश्मा दिखाई दिया। उसने देखा कि बाबा नानक और भाई मरदाना पहाड़ी के दामन में बैठे नए फूटे चश्मे की लहरों का आनन्द ले रहे हैं। यह दृश्य देख वह आग बबूला हो गया। उसने एक बड़ा सारा पत्थर दोनों को निशाना बना कर नीचे गिरा दिया। श्री गुरू नानक देव जी ने बड़ी तीव्र गति से अपनी ओर आते पत्थर को देखा और सहज रूप से अपना दायां हाथ पत्थर को रोकने के लिए बढ़ाया। पत्थर रुक गया और उनके हाथ का पंजा उस पत्थर पर इस तरह अंकित हो गया।"

"अब वली कंधारी को गुरू जी की अद्‌भुत आध्यात्मिक शक्ति का एहसास हुआ। उसका अपनी शक्ति का अहंकार जाता रहा। विनम्र हो वह गुरू जी के चरणों में आ गिरा। कहने लगा, "गुरू जी! अहंकार ने मेरी बुद्धि को मलिन कर दिया है, कृप्या मेरा सही मार्गदर्शन कीजिए।"

गुरू जी ने वली कंधारी से कहा, "तुम तो एक महान तपस्वी हो। अपनी क्षमता परोपकार में लगाओ। अहंकार प्रभु का नाम जपने-जपाने वाले फकीरों को शोभा नहीं देता। बांटकर खाओ। साथ तो कुछ नहीं जाता और फिर पानी तो प्रकृति की बहुत बड़ी नियामत है। हम अज्ञानता तथा हउमै के प्रभाव में आकर देखते नहीं कि प्रभु-सृजित प्रकृति कैसे मुक्त हाथों से बिना भेद-भाव के हम सबको हवा, पानी, प्रकाश आदि सौगातें बख्श रही है! प्यासे को पानी पिलाना तो सबसे बड़ी सेवा है और मानव की सेवा प्रभु-प्राप्ति का सुगम साधन है! कन्द्राओं और पहाड़ों की चोटियों पर केवल निज मुक्ति के लिए साधना करने से कुछ नहीं होगा!" ■

—लेखकगण अपनी रचनाएं e-mail द्वारा भेजते समय साथ में font भी भेजा करें।

—लेखक व पाठकगण गुरमति ज्ञान को अब शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की web site पर भी देख सकते है। log on करें- www.sgpc.net

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०२-२००८

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-६

गुरू-दरबार की शोभा : कवि कुवरेश

*-डॉ राजेंद्र सिंघ**

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के बावन दरबारी कवियों में से एक थे—कवि कुवरेश। कवि कुवरेश के विषय में भाई संतोख सिंघ जी ने 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रुत-२, अध्याय-५१ में थोड़ी सी जानकारी दी है। भाई संतोख सिंघ जी लिखते हैं:

केशवदास हुतो कवि जोइ।
भयो बुंदेलखंड में सोइ।
तिस को पुत्र कुवर है नामू।
सो भी रचत गिरा अभिरामू।

अर्थात बुंदेलखंड क्षेत्र में जो केशवदास नाम के कवि हुए हैं, उनका पुत्र है कुवर और यह भी अपने पिता की ही भांति सुंदर कविता रचते हैं। इस साक्ष्य के कारण कई बार कवि कुवरेश को हिंदी के विख्यात रीति कवि केशवदास का पुत्र समझ लिया जाता है क्योंकि ये केशवदास भी बुंदेलखंड के ही निवासी थे, परंतु वास्तव में यह बात संभव नहीं हो सकती क्योंकि दोनों के काल-खंडों में ज़्यादा फर्क है। केशवदास का समय १५५५ से १६१७ ई तक का है जबकि कवि कुवरेश श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी (१६६६-१७०८ ई) के समकालीन हैं। यही नहीं महाभारत के 'द्रोण-पर्व' का ब्रज भाषा में अनुवाद करते समय कवि कुवरेश स्वयं लिखता है कि उसका यह ग्रंथ संवत् १७५२ वि. अर्थात सन् १६९५ ई में रचा गया है:

संवत सत्रह सै अधिक, बावन बीते और।
तां मे कवि कुवरेश यह, कियो ग्रंथ को डौर।

इस प्रकार कवि कुवरेश और केशवदास में लगभग १०० साल का अंतर है जो पिता-पुत्र में कभी संभव ही नहीं हो सकता। इसलिए स्पष्ट है कि कवि कुवरेश के पिता केशवदास कोई और कवि हैं।

कवि कुवरेश ने एक अन्तर्साक्ष्य में बुंदेलखंड स्थित अपने गांव के विषय में भी बताया है। कवि कहता है कि वह बुंदेलखंड में गंगा-यमुना के दोआब में बसे 'बरी' गांव का रहने वाला है:

गंगा-जमना बीच में बरी, ग्राम को नाम।
तहां सुकवि कुवरेश को, बास करै को धाम।

भाई संतोख सिंघ जी कवि कुवरेश के विषय में और जानकारी देते हुए बताते हैं कि जब बादशाह औरंगजेब को पता चला कि यह कवि कुवरेश हिंदू बहुगुणी है तो उसने इसे मुसलमान बनाना चाहा। जब कवि कुवरेश को इसका पता चला तो वह घर-देश त्याग कर पलायन कर गया और दूर-दराज भ्रमण करता हुआ आनंदपुर साहिब आ पहुंचा:

तुरक करन नवरंग चित चहयो।
गुनी अधिक हिंदुन मे लहयो।
जबै कुवर सुध इस बिधि पाई।
तिआग देश घर गयो पलाई।
दुर दुर दूर दूर नित चलकर।
पहुचयो आन अनंदपुर हितकर।

कवि कुवरेश का सबसे प्रमुख कार्य महाभारत के द्रोणपर्व का ब्रज भाषा में अनुवाद है जो सिद्ध

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना।*

करता है कि कवि ब्रज और संस्कृत का महा पंडित था। कवि की काव्य-रचना उसे एक अत्यंत उच्च कोटि का कवि भी घोषित करती है। कवि कुवरेश ने गुरू साहिबान की स्तुति में सुंदर दोहे रचे हैं। श्री गुरू नानक देव जी की स्तुति में कवि कहता है:

वाहुज बेदी कुल भये नानक गुरू अनूप।
जिन मे पूरो पाइए पारब्रहम को रूप।

इसी प्रकार श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के साहित्य-प्रेम की प्रशंसा में कवि कहता है–

गुरु गोबिंद नरिंद हैं, तेग बहादर नंद।
जिन ते जीवत हैं सकल, भूतल कवि बुधब्रिंद।

इसके अतिरिक्त कवि कुवरेश को सिख इतिहास एवं परम्परा का भी अच्छा ज्ञान था। श्री गुरू हरिक्रिशन साहिब से श्री गुरू तेग बहादर जी को गुरगद्दी मिलने के प्रसंग को चित्रित करते हुए कवि लिखता है कि जब अष्टम पातशाह से अगले गुरू के विषय में प्रश्न किया गया तो आप जी ने श्री गुरू तेग बहादर साहिब की ओर संकेत किया जिन पर अकाल पुरख की कृपा थी—

भये सुनू हरिराय के गुरु अत्रिष्न हरिक्रिशन।
तजयो जबै तिनहूं जगत तबै करी यह प्रश्न।
गुरुता प्रभुता को उचित? तेग बहादर एक।
नारायन जा पर कियो भकिन सुधा को सेक।

गुरू साहिब की शोभा-स्तुति करने वाला यह सहृदय कवि कुवरेश गुरू साहिब के आनंदपुर साहिब छोड़ कर चले जाने तक दशम गुरू के दरबार की शोभा रहा। ■

व्यंग्य बाण

पेट

–डॉ. दादूराम शर्मा 'कोविद'*

अन्न कई क्विंटल चढ़ा, कबसे इसकी भेंट।
फिर भी रीता ही रहा, ऐसा पापी पेट।
सब संघर्षों का है जनक, यह उत्पाती पेट।
करता सबका जगत में, चुन-चुन कर आखेट।
नीति-धर्म-सिद्धांत सब, होते मलियामेट।
अट्टहास कर जागता, जब-जब पापी पेट।
साष्टांग हो मनुजता, करे समर्पण लेट।
सबको पात्र मजाक का, नित्य बनाता पेट।
कहीं धर्म रिश्ते कहीं, बिकते तन सुकुमार।
आत्मा वंदी पेट की, फैला पापाचार।
बेईमानी छल-कपट, भ्रष्टाचार फरेब।
सत्यानाशी पेट से, निकले सारे ऐब।
पशु तो उतना संग्रहे, जितना चाहे पेट।
दीर्घ काल के लिए वह, धरता नहीं समेट।
धरता नहीं समेट किन्तु, नर संग्रह करता।
उसका उदर असीम कभी भी, जो न भरता।
तृष्णा कुल मस्तिष्क क्योंकि, अब पेट बना है।
जिससे जग में सभी जगह, संघर्ष ठना है।
तीन तरह के पेट हैं—भूखा, तृप्त, अतृप्त।
भूखा भोजन, तृप्त सृजन, करे ध्वंस अतृप्त।
भरे पेट से फूटती, ज्ञान-कला-रसधार।
शौर्य उमड़ता कल्पना, उड़ती पंख पसार।
पेटों ने ही विश्व में, लिखा प्रगति इतिहास।
पेटों से ही विश्व का, होता रहा विनाश।
जब जठराग्नि ज्वलित हो, लुप्त ज्ञान-विज्ञान।
रोटी-सा चंदा दिखे, रोटी मय भगवान्।
सबके पेट भरें तभी, संभव सतत् विकास।
खाली पेटों की अनल करे, न विश्व-विनाश।
सब भूखे हों तृप्त अब, संयत हों अतृप्त!
मन में शुभ संकल्प ले, रहें सृजनरत तृप्त! ■

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महाराजबाग, भैरवगंज, सिवनी (म. प्र.)-४३०६६१

खब़रनामा

श्री हरिमंदर साहिब के लंगर भवन की सफाई के लिए दो मशीनें भेंट

अमृतसर : गुरू-घर की सेवा में अति आधुनिक साधनों का प्रयोग होना शुरू हो गया है। कुछ समय पूर्व हांगकांग की सिख संस्था द्वारा प्रसादा तैयार करने की भेंट की गयी। जिस अति आधुनिक मशीन ने लंगर तैयार करने में सुविधा दी है वहीं अब दुबई के एक परिवार ने लंगर भवन की सफाई सेवा के लिए फर्श साफ करने वाली दो मशीनें शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को भेंट की हैं। दुबई के प्रसिद्ध ठेकेदार स. सुरिंदर सिंघ कंधारी ने बीस लाख की लागत की इन मशीनों को शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को सौंपा। यह मशीन बैटरी के साथ लगातार पांच घंटे चलती है। इसमें प्रति घंटा ४४०० वर्ग फुट फर्श साफ करने की सामर्थ्य है। इस मशीन में फ्लोर क्लीनर कैमिकल डाला जाता है। मशीन पहले फर्श से डस्ट को पानी में घोलती है फिर उसको अपने अंदर खींच लेती है। इसमें सफाई के लिए १४० लीटर पानी रखने की सामर्थ्य है। स. सुरिंदर सिंघ कंधारी द्वारा भेंट मशीनें स्वीकार करते समय जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शि: गु: प्र: कमेटी ने कहा कि देश-विदेश में बसे हुए सिखों ने गुरू-घर में अटूट विश्वास व कड़े परिश्रम से एक बड़ा योगदान डाला है। यही कारण है कि विदेशी सरकारों ने भी सिखों की धार्मिक मर्यादाओं व सिख सिद्धांतों को मान्यता दी है। श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी ने कहा कि स. सुरिंदर सिंघ कंधारी व उनके परिवार द्वारा गुरू-घर को भेंट की गई सफाई की मशीनों से लंगर भवन की पहले से भी बेहतर सफाई होगी। अरदास के बाद जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी व जत्थेदार अवतार सिंघ ने बटन दबा कर मशीन को चलाया। नए युग की विकसित तकनीक की ऐसी मशीनों के प्रयोग को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब के हैॅड ग्रंथी ज्ञानी गुरबचन सिंघ जी, अरदासिया भाई धर्म सिंघ जी, शिरोमणि कमेटी सदस्य स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, मैनेजर स. हरभजन सिंघ के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

शिरोमणि कमेटी द्वारा डा. निरंकार सिंघ नेकी का सम्मान

अमृतसरः शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के मुख्य कार्यालय अमृतसर में स्थित गुरू नानक निवास के एकत्रता घर में डा. निरंकार सिंघ नेकी को सम्मानित करते समय शिरोमणि कमेटी के महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बीमार मनुष्य की सेवा को उत्तम सेवा का दर्जा प्राप्त है। आज के पदार्थवादी युग में नि:स्वार्थ सेवा करने वाले मनुष्य बहुत ही कम मिलते हैं, लेकिन डा. निरंकार सिंघ नेकी ने ऐसी सेवा को अपने जीवन में खूब कमाया है। उन्होंने कहा कि डा. नेकी सेवा के साथ-साथ जरूरतमंदों के लिए खूनदान करने से भी पीछे नहीं रहते। स. सुखदेव सिंघ ने कहा कि डा. नेकी ने मेडिकल व्यवसाय के रूप में काम करते हुए प्यार और हमदर्दी भरे ढंग से सेवा-भावना को उजागर किया है। उन्होंने कहा कि और भी खुशी की बात है कि डा. नेकी द्वारा साबत-सूरत रहते हुए

भाई कन्हैया जी की भूमिका को प्रदर्शित किया है। डा. नेकी अपनी कमाई में से दसवंध निकालकर गरीबों की सेवा में लगाते हैं। डा. नेकी का जीवन बहुत ही सादा एवं वास्तविकता के नजदीक है। उन्होंने कहा कि डा. नेकी वर्तमान तेज रफ्तार मोटरगाड़ियों वाले युग में भी साईकिल द्वारा ही सफर करते हैं। डा. नेकी निर्धारित रागों में गुरबाणी का कीर्तन भी करते हैं। डा. निरंकार सिंघ नेकी वर्तमान समय में अमृतसर के गुरू नानक अस्पताल तथा सरकारी मेडिकल कालेज में बतौर प्रोफेसर मेडिसन विभाग सेवा निभा रहे हैं। डा. नेकी को २४ से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप प्राप्त हैं। चिकित्सकीय खोजों में उनके द्वारा बड़ी संख्या में पुस्तिकाएं भी प्रकाशित की जा चुकी हैं। डा. नेकी अपने जीवन में जरूरतमंदों के लिए २४ बार रक्तदान भी कर चुके हैं।

तिब्बती धर्म के मुखिया श्री दलाईलामा व अन्य धर्मों के मुखी श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक हुए

अमृतसर: दुनिया भर से आए विभिन्न धर्मों के मुखियों ने गत दिनों श्री हरिमंदर साहिब में विश्व-शांति, सद्भावना बनाए रखने, आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने तथा परस्पर प्रेम-प्यार एवं सब धर्मों में भाईचारा बढ़ाने की अरदास की। इस शुभ अवसर पर तिब्बती धर्म के मुखिया श्री दलाईलामा ने श्री हरिमंदर साहिब में नतमस्तक होकर पावन गुरबाणी का कीर्तन श्रवण किया। श्री दलाईलामा ने कहा कि भारत व चीन के सम्बंध सुधरें, इसके लिए वे बाधा नहीं हैं। वे भारत में रहते हैं इसलिए भारत व चीन के सम्बंधों को मजबूत करने में यह कारण नहीं होना चाहिए। दलाईलामा इजराइल की 'एलिजा इंटर फेथ इंस्टीट्यूट' द्वारा विश्व के प्रमुख धर्मों के विद्वानों द्वारा 'ज्ञान-मंथन : प्यार व क्षमा' विषय पर आयोजित सैमीनार में भाग लेने आए थे। उन्होंने कहा कि वे विदेशों में धर्म व तिब्बत के सभ्याचार का प्रचार-प्रसार करते हैं।

उन्होंने कहा कि भारत तथा चीन के दरमियान दोस्ताना सम्बंधों का तिब्बत को लाभ होगा। इन दोनों देशों में सम्बंध सुधारने से दक्षिणी एशिया में शांति के माहौल को बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर दुनिया भर में आतंकवाद को रोकना चाहिए। चीन द्वारा तिब्बत में बनाई जा रही सड़क एवं रेलवे लाईन के बारे में उन्होंने कहा कि इन्हें तिब्बत के विकास के लिए प्रयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों के अगुओं को एक मंच पर इकट्ठे कर विश्व-शांति बनाए रखने की कोशिश की जानी चाहिए। श्री हरिमंदर साहिब में शिरोमणि कमेटी अधिकारियों द्वारा उन्हें सिख धर्म, सिख इतिहास तथा सिख रहत मर्यादा के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने लंगर में बैठकर गुरू का लंगर भी छका। श्री हरिमंदर साहिब के सूचना केंद्र में श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी, शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ तथा श्री हरिमंदर साहिब के हैॅड ग्रंथी ज्ञानी गुरबचन सिंघ जी ने दलाईलामा को सिरोपा, कृपाण, श्री हरिमंदर साहिब की तस्वीर तथा धार्मिक पुस्तकों का सॅट भेंट कर सम्मानित किया। ■